



जनसंख्या नियंत्रण कानून
विधेयक को समर्थन मिलना चाहिए

..... इंडियाज़ फास्टेस्ट ग्रोइंग न्यूज़ पेपर.....

परिवार का कब्जा बना रहे,
पूरी कांग्रेस को ही दाँव पर लगा दिया



सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17
अंक-1
मासिक
1 अप्रैल 2020
पृष्ठ-12
मूल्य- पाँच रुपये



**कोरोना
वायरस
मानव जाति पर
अब तक का
सबसे गंभीर
खतरा है**
p4

कोई मजबूरी नहीं बल्कि मध्य प्रदेश की जरूरत है शिवराज
सिंह चौहान **p3**



मरकज मामले की जांच से पहले किसी नतीजे पर पहुंचना
सही नहीं- मुस्लिम संगठन **p12**



अन्दर के पृष्ठ पर.....

यस बैंक की विफलता- बैंकिंग तंत्र के
असफल होने का संकेत **P-2**

विधायक अतिशी ने निजामुद्दीन मरकज के
खिलाफ कार्रवाई की मांग **P-12**

सोशल डिस्टेंसिंग नहीं तो आपको ही नहीं
देश को भी कीमत चुकानी पड़ेगी **P-5**

मजदूरों को रसायन से नहलाने का अमानवीय
काम नहीं करे -प्रियंका गांधी **P-12**

सम्पादक की कलम से

चीन के वुहान शहर से उपजा कोरोना वायरस अब पूरी दुनिया में जाकर फैल गया है। आज विश्व के 196 देशों में कोरोना के मामले सामने आए हैं। चीन ने इस पूरे मामले में अनेक अहम जानकारी छिपाई जिसकी वजह से यह एक महामारी का रूप ले गई है। कोरोना वायरस के कहर से विश्व में ज़िदगी एकदम रूप सी गई है। चीन के वुहान से शुरू हुए इस दुश्मन वायरस से अब तक लाखों लोग मारे गए हैं। इतना ही नहीं, लगभग 150 से अधिक देशों पर कोरोना वायरस का बहुत बुरा असर पड़ा है। चीन ने अगर आरम्भ में और ज्यादा सावधानी बरती होती तो कोरोना को फैलने से संभवतः रोका जा सकता था। कम से कम इसके इतने बड़े विनाश से बचा जा सकता था। अमेरिका की पत्रिका नेशनल रिव्यू में छपी एक खबर के मुताबिक चीन ने सही तथ्य दुनिया से छिपाकर रखे जिससे यह समस्या विकराल हो गई है। इसका पर्दापण वुहान के जंगली जानवरों के बाजार से शुरू हुआ।

दिसम्बर 2019 को सबसे पहले मनुष्य में कोरोना वायरस के लक्षण सामने आए। लगभग पांच दिन बाद मरीज के परिवार में उसकी पत्नी भी कोरोना से पीड़ित हो गई। इस दौरान यह साफ संकेत सामने आया कि यह वायरस इंसान से इंसान में ही प्रसारित हो रहा है। 31 दिसम्बर को वुहान के हैल्थ कमिशन ने यह घोषणा कर दी कि यह वायरस मनुष्य से मनुष्य में नहीं फैलता है। चीन ने इस तरह के मामले सामने आने के तीन हफ्ते बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन को इसके बारे में सूचना दी। इस मामले में चीन ने किस तरह से इस पूरे मामले को दुनिया से छिपाए रखा। दिसम्बर 2019, इस दिन पहले बीमार में कोरोना के लक्षण सामने आए। पांच दिन बाद मरीज की पत्नी भी कोरोना वायरस से पीड़ित हो गई और उसे भी अलग-थलग चिकित्सालय में भता कराया। दिसम्बर के दूसरे सप्ताह में वुहान के डॉक्टर उन लोगों की तलाश कर रहे थे जिनमें यह वायरस प्रथम बार फैला था।

इसी दौरान यह बात भी सामने आयी कि वायरस इंसान से इंसान में तेरी से फैल रहा है। 25 दिसम्बर को वुहान के दो चीनी मेडिकल स्टॉफ में भी कोरोना का लक्षण पाया गया और उन्हें अलग-थलग कर दिया था। इस पूरे मामले का पर्दाफाश करने वाले डॉक्टर ली वेनलियांग ने डॉक्टरों के एक समूह को चेतावनी दी कि यह सार्स हो सकता है। 31 दिसम्बर को वुहान के हैल्थ कमिशन ने यह घोषणा कर दी कि यह वायरस मनुष्य से मनुष्य में नहीं संक्रमणित होता है। यही नहीं, चीन ने इस तरह के मामले सामने आने के तीन सप्ताह बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन को इस बारे में बताया। इसके बाद डॉक्टरा ली को वुहान के पब्लिक सिक्यूरिटी में बुलाया गया और उन पर अफवाह फैलाने का आरोप लगाया। इतना ही नहीं, चीन के नेशनल हैल्थ कमिशन ने आदेश दिया कि इस बीमारी के बारे में कोई बात सार्वजनिक नहीं की जाए। उसी दिन हुबेई के प्रांतीय स्वास्थ्य आयोग ने वुहान के सारे सेंपल को नष्ट कर दिया। अमेरिका के न्यूयार्क टाइम्स ने छह जनवरी को अपनी एक रिपोर्ट में बताया कि 59 लोग वुहान में न्यूमोनिया जैसी बीमारी से ग्रस्त हैं। इसके पश्चात चीन ने सेवन 1 की यात्रा निगरानी जारी की। चीन ने कहा कि लोग वुहान में ज़िदा या मरे हुए जानवरों, जानवरों के बाजार और बीमार लोगों से दूर रहे और वहाँ न जाए। चीन की इस देरी का नतीजा यह हुआ कि आज कोरोना वायरस पूरी दुनिया में फैल गया।

कहीं भारतीय बैंकिंग तंत्र के असफल होने का संकेत तो नहीं यस बैंक की विफलता ?

कुल समय पूर्व राणा कपूर को गिरफ्तार कर लिया है और अदालत ने उसे ज्यूडिशियल कस्टडी में रखने का आदेश भी दे दिया है परन्तु प्रश्न यह है कि इस बैंक में धनराशी जमा कराने वाले आम लोगों को किस तरह यह बैंक अपनी ही धनराशी निकालने के लिए शर्तों से बांध सकता है ?

प्रायवेट सेक्टर के 'यस बैंक' का दिवालीया स्थिती में पहुँचना एवं इस बारे में सरकार द्वारा उठाये गये कदम दोनों ही स्थितियाँ संदेह के घेरे में हैं। ऐसा कैसे हो सकता है कि एक तरफ तो सरकार अपने अधिन में चलने वाली लाभप्रद कम्पनियों की पूँजी बेच कर धनराशी की उगाही कर रही है और दूसरी तरफ वित्तीय आर्थिक-घोटालों को प्रायोजित कर निजी बैंकों एवं संस्थानों के लिए अपने ही वित्तीय संस्थानों के माध्यम से बचाव अभियान चला रही है, ये आर्थिक प्रयोग एवं नीतियाँ भारत की आर्थिक नीतियों को धुंधलाने के ही उपक्रम हैं। यस बैंक में अपनी मेहनत की जमा पूँजी के खतरे में होने की संभावनाओं ने ही असंख्य खाताधारकों के न केवल अर्थ को बल्कि जीवन को ही विपरित स्थिती में डाल दिया है। इस तरह की घटनाएं न केवल भारतीय बैंकिंग व्यवस्था पर बल्कि केन्द्र सरकार के उपर भी एक बदनुमा कलंक है।

यह सच्चाई गले नहीं उतर रही है कि देश की आर्थिक व्यवस्था को सम्भालने वाले लोगों के हाथ इस कदर दागदार हो गए हैं कि दिन प्रतिदिन एक नया बैंक घोटाला जिसमें जनता की गाड़ी कमाई को लुटा जा रहा है। आजकल के समय में जो सुनने और देखने में आ रहा है, वह पूरी तरह असत्य भी नहीं है। लेकिन यह किसी ने भी नहीं सोचा कि जो बैंक देश की आर्थिक बागडोर सम्भाले हुए थे और जिन पर पब्लिक मनी को सुरक्षित रखने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी थी, क्या वे सब इस बागडोर को छोड़कर अपनी निजि हित व अपना भला करने में लग गये और पब्लिक मनी के को हड़पते हुए आर्थिक घोटाले करने लगे।

आज यस बैंक के प्रमोटर राणा कपूर को ईडी ने आर्थिक घोटाले के आरोप में गिरफ्तार कर लिया है और कोर्ट ने उसे 11 मार्च तक ज्यूडिशियल कस्टडी में रखने का निर्देश भी दे दिया है परन्तु असल सवाल यह है कि इस बैंक में धन जमा कराने वाले आम जनता को किस तरह यह बैंक अपना ही पैसा निकालने के लिए शर्तों से बांध सकता है ? यह तो सर्वविदित है कि बैंक में चल रही घोखाधडी को पकड़ने की जिम्मेदारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की ही है। लोगों का पैसा सुरक्षित रहे, इसकी जिम्मेदारी भी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया अपनी जिम्मेदारी से किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता, केन्द्र सरकार भी इन स्थितियों के लिये पूर्णतः दोषी है। जनता अपने घर पर अपनी मेहनत की पूँजी को जमा रख नहीं सकते, बैंकों में जमा करायें तो इस जमा धन के सुरक्षित रहने की गारंटी नहीं, ऐसी स्थिती में क्या करे आम आदमी ? यह कैसी व्यवस्था है ? यदि बैंकिंग व्यवस्था से लोगों का विश्वास उठ गया तो फिर कौन जाएगा बैंकों में ? लोगों का बैंकिंग तंत्र में भरोसा बहाल करने के लिए केन्द्र सरकार को कठोर कदम उठाने ही होंगे अन्यथा पूरा अर्थतंत्र ही अस्थिर एवं डूब जायेगा। कैसे विडम्बनापूर्ण स्थिति देखने को मिल रही है कि यस बैंक के खाताधारक अपनी ही धनराशी निकालने के अनेक शर्तों को झेल रहे हैं, वे परेशान हैं, भयभीत हैं, डरे हुए हैं। जरूरत के मुताबिक लोग बैंक से अपना ही पैसा नहीं निकाल पा रहे। जो व्यक्ति सेवानिवृत्त हो चुका है, उसे अपनी लड़की का विवाह करना हो, खरीदे गये मकान की किश्त जमा करनी हो, बच्चों की स्कूल फीस जमा करनी हो, लाईलाज बीमारी का इलाज कराना हो और उसकी बैंक में लाखों की रकम विश्वास के साथ जमा हो, उसकी लाचारी इतनी कि वह बैंक में जमा धनराशी के बावजूद अपनी इन मूलभूत आवश्यकता के लिये धनराशी नहीं निकाल सकता। ये सभी परिस्थितियाँ शासन व्यवस्था के विश्वास पर सवालिया निशान हैं।

यस बैंक के खाताधारकों की पीड़ा तो नोटबंदी की पीड़ा से कहीं अधिक है। कब तक कुछेक घोटालेबाज एवं घपलेबाज लोगों को जनता की खून-पसीने की कमाई की बैंकों में जमा रकमों को उनकी ऐश और तफरीह का जरिया बनने दिया जाता रहेगा ? बैंक किसी भी देश के आर्थिक विकास की रीढ़ होते हैं और इनमें आम लोगों का यकीन इस तरह होता है कि मुसीबत के वक्त अपनी रकम को पाने में उन्हें किसी तरह की समस्या नहीं आयेगी। कल तक हर शहर कस्बे में अपनी 1100 शाखाओं के माध्यम से लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने वाला यस बैंक अचानक ही खाताधारकों के लिये नो बैंक बन कर उन्हीं लोगों से कह रहा है कि एक महीने में बस 50 हजार की रकम ही निकाल सकते हो! इन स्थितियों से पैदा हुए हालातों के लिये खाताधारक अपने

दर्द को लेकर किनके पास जाये ? कौन सुनेगा इनकी पीड़ा, कौन बाँटेगा इनका दुःख-दर्द। यह इस देश की विडम्बना ही है कि यहां आम आदमी लुट रहा है, मुट्ठीभर राजनीतिज्ञ और पूँजीपति ऐश कर रहे हैं। आजादी के सात दशक का सफर तय करने के बाद भी आम आदमी ठगा जा रहा है, उसको लूटने वाले नये-नये तरीके लेकर प्रस्तुत हो जाते हैं। कभी इन्हें पलैट देने के नाम पर लूटा जाता है तो कभी कर्ज देने के नाम पर। कभी नौकरी दिलवाने के नाम पर इनसे ठगी की जाती है, तो कभी स्कूल-कालेज में दाखिले के नाम पर। कभी बैंक का दीवाला पिट गया तो इनसे धोखा हुआ। आखिर मेहनत करने वाले लोग किसकी चौखट पर जाकर अपना दुख सुनाये, किसको अपने दर्द की दुहाई दें। आज किसको छू पाता है मन की सूखी संवेदना की जर्मी पर औरों का दुःख-दर्द ? बैंक घोटालों की त्रासद चुनौतियों का क्या और कब अंत होगा ? बहुत कठिन है बैंकों के भ्रष्टाचार, अराजकता, घोटालों-घपलों की उफनती नदी में नौका को सही दिशा में ले चलना और मुकाम तक पहुँचाना।

दरअसल भारत में बैंकिंग व्यवसाय बड़े ही सुनियोजित ढंग से खैराती दुकानों में तब्दील होता गया है। आम जनता को अच्छी सेवा व लाभ के लालच में फंसा कर चन्द पूँजीपतियों को मालामाल बनाने का काम षड्यंत्रपूर्वक होता रहा है और जनता की छोटी-छोटी बचत पर अपने ऐश करने का जरिया ढूँढा जाता रहा है। पंजाब व महाराष्ट्र कोऑपरेटिव बैंक (पीएमसी) घोटाला ठीक इसी तर्ज पर किया गया। इस बैंक या यस बैंक में अपना धन जमा करने वाले लोग अब दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। तेजी से विकास करती अर्थव्यवस्था वाले देश में बैंकों का 'फेल' होना बहुत ही खतरनाक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। ऐसी जटिल एवं विषम स्थितियों में भारत की अर्थव्यवस्था को कैसे नियोजित किया जायेगा ? रिजर्व बैंक ने यस बैंक को बचाने के लिए स्टेट बैंक की मार्फत जो स्कीम तैयार की है वह निजी क्षेत्र के बैंकों में फैली अराजकता का समाधान नहीं हो सकती।

अब सवाल यह है कि भ्रष्ट लोगों और बैंक का पैसा डकार कर भागने वाले के गुनाह का खामियाजा बैंक के ग्राहक क्यों भुगतें ? घोटालेबाज क्यों नहीं सजा पाते ? क्यों नहीं भविष्य में ऐसे घोटाले न होने की गारंटी सरकार देती ? सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोगों और निचले पायदान पर खड़े लोगों के बीच आखिर कब तक धोखेभरा खेल चलता रहेगा ? महंगाई के दौर में पाई-पाई जोड़ने और अपनी बचत को बैंक में डालने वाले आम नागरिक मनी लॉड्रिंग या हवाला जैसा कुछ नहीं कर रहे हैं। फिर उनकी जमा पूँजी को निकालने के लिये तरह-तरह की पाबंदियों क्यों ? यह उनकी मेहनत की कमाई है। जो स्थिति पीएमसी के बाद अब यस बैंक में देखने को मिल रही है, उसके बाद स्पष्ट है कि यदि हर सहकारी बैंक एवं निजी बैंक की छानबीन की जाए तो आधे से ज्यादा बैंकों के फ़ाँड सामने आ जाएंगे। समय रहते उनकी जांच क्यों नहीं की जाती ? लोग पीएमसी और अब यस बैंक काण्ड के माध्यम से भ्रष्टाचार के दानव को ललकार रहे हैं। गांव में चोर को पकड़ने के लिए विरले ही निकलते हैं, पर पकड़े गए चोर पर लातें लगाने के लिए सभी पहुँच जाते हैं। इस यस बैंक ने बैंकों के प्रति विश्वास की हवा निकाल दी। भ्रष्टाचार का रास्ता चिकना ही नहीं ढालू भी होता है। क्या देश मुट्ठीभर राजनीतिज्ञों और पूँजीपतियों की बपौती बनकर रह गया है ?

लोकतंत्र के चेहरे पर बहुत काले दाब हैं, अंधकार हैं, खुला आकाश नहीं है। ऐसा लगता है यहाँ प्रजातंत्र न होकर सज़ातंत्र हो गया। व्यवस्था और सोच में व्यापक परिवर्तन हो ताकि अब कोई अपनी जमा पूँजी के डूबने के भय से जीने को विवश न हो। देश की मोदी सरकार को ऐसा उपाय करना होगा कि बैंक के विफल होने पर कम से कम लोगों की मेहनत की कमाई पूरी मिल सके। कानून में संशोधन इसके लिए भी करना पड़े तो किया जाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं किया गया तो बैंकिंग व्यवस्था से विश्वास उठने के साथ-साथ वह जानलेवा भी बनती जायेगी। तेजी से विकास करते अर्थव्यवस्था वाले देश में बैंकों का असफल होना बहुत ही घातक है। इसका मायने यह है कि बैंक बाजार के प्रभाव में नहीं बल्कि बाजार बैंक के प्रभाव में काम करता है। भारतीय वित्तीय ढांचा डगमगाने और चरमराने की जो स्थितियाँ देखने को मिल रही हैं, वे बैंकों की बदनुमा होते जाने की ही निष्पत्तियाँ हैं।

कोई मजबूरी नहीं बल्कि मध्य प्रदेश की जरूरत है शिवराज सिंह चौहान

ललित पा

शिवराज सिंह चौहान के अंदर राजनीति के प्रति रुझान बचपन से ही था। वे 13 साल की उम्र में ही संघ से जुड़ गए थे और निष्ठावान प्रचारक के रूप में काम किया। उन्होंने कांग्रेस पार्टी को मध्य प्रदेश की सजा से लगभग डेढ़ दशक तक दूर रखा।

भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेताओं में शुमार शिवराज सिंह चौहान ने चौथी बार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपनी पारी शुरु करने जा रहे हैं। भले ही उनकी यह पारी अनेक चुनौतियों का ताज हो, लेकिन उनके कद एवं राजनीतिक कौशल से संभावनाएं की जा रही हैं कि वे इस पारी में भी सफल होंगे और एक नया इतिहास रचेंगे। उन्होंने अपने चौथे कार्यकाल के लिए मध्य प्रदेश विधानसभा में सर्वसम्मति से विश्वास प्रस्ताव हासिल कर अपने हौसलों की उड़ान को पंख दिये हैं। उनकी यह उड़ान न केवल मध्य प्रदेश में भाजपा की स्थिति को मजबूत करेगी बल्कि राष्ट्रव्यापी स्तर पर इसके सकारात्मक परिदृश्य निर्मित होंगे।

शिवराज सिंह चौहान लंबी पारी, विलक्षण पारी खेलने वाले मुख्यमंत्रियों में से हैं। वे शांत एवं शालीन होकर भी आक्रामक राजनीति करने में माहिर हैं। जिस तरह येदियुरप्पा ने सवा साल में ही कांग्रेस-जेडीएस की सरकार के मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी को कुर्सी से बेदखल कर दिया, चौहान को भी करीब-करीब वैसा ही श्रेय एवं अवसर हासिल हुआ है। भले ही येदियुरप्पा के ऑपरेशन लोटस की तरह शिवराज सिंह ने कुछ न किया हो। उन्हें ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने एवं भाजपा में शामिल होने की राजनीतिक स्थितियों का लाभ मिला हो। भाजपा की जरूरत और मजबूरी रही कि शिवराज को ही यह अवसर देना पड़ा, वरना बीजेपी नेतृत्व ने तो उनको दिल्ली अटेच कर ही लिया था। चूंकि बीजेपी के पास शिवराज सिंह जैसे कद का कोई नेता नहीं है, इसलिए वो आसानी से फिट हो गये। भाजपा के प्रमुख नेताओं के बारे में बात करें तो शिवराज सिंह चौहान एक स्तंभ के रूप में नजर आते हैं। वे एक ऐसे नेता हैं जिन्होंने बीजेपी के लिए मुश्किल से मुश्किल हालात में न केवल खुद को आगे रखा, बल्कि पार्टी को मजबूती देने में अपनी प्रतिभा एवं राजनीतिक क्षमताओं का लोहा मनवाया। चाहे फिर संगठन में भूमिका निभानी हो या फिर सत्ता चलानी हो, शिवराज सिंह ने अपनी योग्यता प्रमाणित की।

शिवराज सिंह चौहान के अंदर राजनीति के प्रति रुझान बचपन से ही था। वे 13 साल की उम्र में ही संघ से जुड़ गए थे और निष्ठावान प्रचारक के रूप में काम किया। उन्होंने कांग्रेस पार्टी को मध्य प्रदेश की सत्ता से लगभग डेढ़ दशक तक दूर रखा। मध्य प्रदेश में उनके रहते पार्टी ने लोकसभा चुनावों में भी अच्छा प्रदर्शन किया है। 2014 की लोकसभा चुनावों में राज्य की कुल 29 से 27 सीटों पर भाजपा ने जीत हासिल की थी। वह लगातार पांच बार सांसद रहे और 13 साल तक लगातार मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री रहे। मध्य प्रदेश में वह मामाजी के नाम से जाने जाते हैं। उन्होंने मध्य प्रदेश को बीजेपी के लिए एक मजबूत गढ़ बनाने में अहम भूमिका निभाई है। शिवराज सिंह 2003-2004 में भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। 1990 में पहली बार बुधनी विधानसभा से विधायक बने। अगले ही साल वह पहली बार लोकसभा चुनाव भी जीते। वह पांच बार लगातार विधानसभा-लोकसभा सीट से चुनाव जीते। इसके बाद वह 2005 से 2018 तक तीन बार मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर काबिज रहे। पिछले चुनाव में बीजेपी बहुमत से दूर रह गई, इस कारण उन्हें मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ गया था, लेकिन अल्पमत में आने के बाद कमलनाथ ने इस्तीफा दिया और शिवराज चौथी बार मुख्यमंत्री बने हैं।

शिवराज सिंह चौहान को हम भारतीयता एवं भारतीय राजनीति का उज्ज्वल नक्षत्र कह सकते हैं, वे चित्रता में मित्रता के प्रतीक हैं तो गहन मानवीय चेतना के चितरे जुझारू, निडर, साहसिक एवं प्रखर राजनीतिक व्यक्तित्व हैं।



वे एक ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, जिन्हें भाजपा का एक यशस्वी योद्धा माना जाता है। उन्होंने आमजन के बीच, हर जगह अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया। लाखों-लाखों की भीड़ में कोई-कोई चौहान जैसा विलक्षण एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति राजनीति की प्रयोगशाला में विभिन्न प्रशिक्षणों-परीक्षणों से गुजर कर महानता, कर्मठता एवं राजनीतिक कौशल का वरन करता है, राजनीति के उच्च शिखरों पर आरूढ़ होता है और अपनी मौलिक सोच, कर्मठता, राजनीतिक जिजीविषा, पुरुषार्थ एवं राष्ट्र-भावना से समाज एवं राष्ट्र को अभिप्रेरित करता है। राज्य में गिरते पुरुष स्त्री अनुपात को देखते हुए इन्होंने कई योजनाएं चलाई जिसका राज्य को फायदा भी हुआ।

शिवराज सिंह चौहान एमए फिलोसफी में गोल्ड मेडलिस्ट हैं। पेशे से वे किसान हैं। वे न केवल भाजपा बल्कि भारतीय राजनीति का एक आदर्श चेहरा हैं। उन्होंने आदर्श एवं संतुलित समाज निर्माण के लिये कई नए अभिनव दृष्टिकोण, सामाजिक सोच और कई योजनाओं की शुरुआत की। वे मूल्यों की राजनीति एवं समाजसेवा करने वाले जनसेवक हैं। देश और प्रदेशवासियों के लिये कुछ खास करने का जज्बा उनमें कूट-कूट कर भरा है। माना जा रहा है कि शिवराज सिंह चौहान ने सदन में बहुमत का आंकड़ा आसानी से पा लिया है हालांकि भविष्य में उनके सामने कई चुनौतियां भी हैं। जिसमें अगले छह

महीनों के अंदर प्रदेश की 24 विधानसभा सीटों पर होने वाला उपचुनाव प्रमुख है। शिवराज को अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए इनमें से नौ सीटें जीतना जरूरी है। कोई आश्चर्य नहीं कि वे इन उपचुनावों में भी कोई चमत्कार घटित कर दें।

शिवराज सिंह चौहान ने अपनी योग्यता, दूरदर्शिता और राजनीतिक की समझ को साबित किया है और भाजपा को आगे ले जाने में बड़ी भूमिका निभाई है। वे समाज के लिये पूरी तरह समर्पित हैं और समाज के उत्थान, राष्ट्रीय-एकता और सामाजिक समरसता के लिये अनूठे प्रयोग करते रहते हैं। वे एक ऐसे जीवन की दास्तान हैं जिन्होंने अपने जीवन को बिन्दु से सिन्धु बनाया है। उनके जीवन की दास्तान को पढ़ते हुए जीवन के बारे में एक नई सोच पैदा होती है। जीवन सभी जीते हैं पर सार्थक जीवन जीने की कला बहुत कम व्यक्ति जान पाते हैं। शिवराज सिंह के जीवन कथानक की प्रस्तुति को देखते हुए सुखद आश्चर्य होता है एवं प्रेरणा मिलती है कि किस तरह से दूषित राजनीतिक परिवेश एवं आधुनिक युग के संकुचित दृष्टिकोण वाले समाज में जमीन से जुड़कर आदर्श जीवन जिया जा सकता है, आदर्श स्थापित किया जा सकता है। और उन आदर्शों के माध्यम से देश की राजनीति, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और वैयक्तिक जीवन की अनेक सार्थक दिशाएं उद्घाटित की जा सकती हैं। उन्होंने व्यापक संदर्भों में जीवन के सार्थक

आयामों को प्रकट किया है, वे आदर्श जीवन का एक अनुकरणीय उदाहरण हैं, मूल्यों पर आधारित राजनीति, समाजसेवा एवं राष्ट्रीयता को समर्पित एक लोककर्म का जीवनवृत्त है। उनके जीवन से कुछ नया करने, कुछ मौलिक सोचने, राजनीति को मूल्य प्रेरित बनाने, जनसेवा एवं आदर्श राजनीति का संसार रचने, सद्प्रवृत्तियों को जागृत करने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

शिवराज सिंह चौहान वर्तमान भारतीय राजनीति के कद्दावर नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता भरी नीतियों से प्रभावित हैं और उन नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने के लिये तत्पर हैं। वे एक राजनीतिज्ञ के रूप में सदा दूसरों से भिन्न हैं। घाल-मेल से दूर। भ्रष्ट राजनीति में बेदाग। विचारों में निडर। टूटते मूल्यों में अडिग। घेरे तोड़कर निकलती भीड़ में मर्यादित। उनके जीवन से जुड़ी विधायक धारणा और यथार्थपरक सोच ऐसे शक्तिशाली हथियार हैं जिसका वार कभी खाली नहीं गया। वे जितने उच्च नैतिक-चारित्रिक राजनेता एवं कुशल नेतृत्व है, उससे अधिक मानवीय एवं सामाजिक हैं। शपथ लेते ही सामने खड़ी कोरोना वायरस से प्रदेश को मुक्ति दिलाने का उनका संकल्प एवं उसकी तैयारी इस बात का द्योतक है।

शिवराज सिंह चौहान को एक सुलझा हुआ और कद्दावर नेता, जनसेवक एवं समाज-निर्माता माना जाता है। उनका चौथी बार

मुख्यमंत्री के रूप में अभिषेक एक आदर्श एवं बेबाक राजनीतिक सोच का राज्याभिषेक है। वे सिद्धांतों एवं आदर्शों पर जीने वाले व्यक्तियों की श्रृंखला के प्रतीक हैं। उनका मुख्यमंत्री के रूप में पदस्थापन राजनैतिक जीवन में शुद्धता का, मूल्यों का, मूल्यपरक राजनीति का, आदर्श के सामने राजसत्ता को छोटा गिनने का या सिद्धांतों पर अडिग रहकर न झुकने, न समझौता करने का पदस्थापन है। शिवराज सिंह के सामने कमलनाथ रूपी बड़ी चुनौती है। राजनीति में एक दूसरे से बदला लेने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है ऐसी स्थितियों में भी चौहान नये मूल्य एवं मानक गढ़ते हुए राजनीतिक वातावरण को धुंधलका भरा नहीं बनने देंगे। जबकि हमने देखा कि राजनीति और राजनीतिक विरोध की स्थितियों

के बीच भी शिवराज सिंह चौहान की लोकप्रियता में कोई खास कमी नहीं आयी थी, सत्ता जरूर चली गयी लेकिन मामा का दरबार पहले की ही तरह लगता रहा। लोग उनके घर पर इंतजार कर रहे होते और वे आते ही लोगों के बीच बैठ जाते और लोग अपनी समस्याएं सुनाने लगते- लोगों की शिकायतें सुनने के बाद शिवराज सिंह चौहान पॉकेट से मोबाइल निकालते और अधिकारियों को उनकी शिकायतों के निवारण के लिए बात भी कर लिया करते।

शिवराज सिंह चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनूठा है, प्रेरक हैं, सफल राजनेता, संवेदनशील व्यक्तित्व, कुशल प्रशासक के रूप में उनकी अनेक छवि, अनेक रंग, अनेक रूप में उभरकर सामने आते रहे हैं। वे समर्पित-भाव से राजनीतिक-धर्म के लिये प्रतिबद्ध हैं। आपके जीवन की दिशाएं विविध एवं बहुआयामी हैं। आपके जीवन की धारा एक दिशा में प्रवाहित नहीं हुई, बल्कि जीवन की विविध दिशाओं का स्पर्श किया। यही कारण है कि कोई भी महत्वपूर्ण क्षेत्र आपके जीवन से अछूता रहा हो, संभव नहीं लगता। आपके जीवन की खिड़कियाँ समाज एवं राष्ट्र को नई दृष्टि देने के लिए सदैव खुली रही। उनकी सहजता और सरलता में गोता लगाने से ज्ञात होता है कि वे गहरे मानवीय सरोकार से ओतप्रोत एक अलहड़ राजनीतिक व्यक्तित्व हैं जिनसे आती ताजी हवाएं राजनीति की शुभता को उजागर करती हैं।

कोरोना वायरस मानव जाति पर अब तक का सबसे गंभीर खतरा है

कोरोना वायरस

दुनियाभर के विशेषज्ञ एक स्वर में कह रहे हैं कि कोरोना की अब तक कोई वैक्सीन नहीं बनी है और न ही इसका कोई इलाज है, वहीं सोशल मीडिया के 'महाज्ञानी' लोग कोरोना को लेकर बेतुका ज्ञान बांट रहे हैं।



तीन महीने पहले चीन के वुहान शहर से हुआ कोरोना का कहर देखते ही देखते दुनिया के लगभग सभी देशों तक पहुंच गया है। कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या दुनियाभर में चार लाख तक पहुंच गई है और 17 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। इटली में तो कोरोना के कारण चीन से भी ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। कोरोना को लेकर कई देशों में लॉकडाउन की स्थिति है, अर्जेंटीना में भी 20 मार्च को लॉकडाउन घोषित कर दिया गया है। भारत में भी कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है, जिसे देखते हुए 24 मार्च को रात 12 बजे से पूरे देश में लॉकडाउन कर दिया गया है।

हालांकि जनता कर्फ्यू की सफलता देखते हुए कई राज्यों में 22 मार्च को ही लॉकडाउन या कर्फ्यू लागू कर दिया गया था लेकिन अब भारत में कोरोना के मंडराते खतरे के मद्देनजर देशभर में लॉकडाउन कर दिया गया है। देश में अभी तक कोरोना के करीब साढ़े पांच सौ मामले सामने आ चुके हैं और कोरोना का खतरा निरन्तर गहरा रहा है। खतरे का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि दो सप्ताह में ही देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या दस गुना से ज्यादा हो गई। यही कारण है कि केन्द्र सरकार सहित तमाम राज्य सरकारें इसे द्वितीय चरण से तीसरे चरण में पहुंचने से रोकने के लिए कमर कस रही हैं।

आमतौर पर जब भी कोई प्राकृतिक संकट आता है तो कुछ देशों अथवा राज्यों तक ही सीमित रहता है लेकिन इस बार का संकट

ऐसा है, जिसने विश्वभर की पूरी मानव जाति को संकट में डाल दिया है। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को अब अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि कोरोना के आसन्न खतरे को हल्के में लेना देश के लिए बेहद खतरनाक हो सकता है। दरअसल अभी तक विज्ञान कोरोना महामारी से बचने के लिए कोई निश्चित उपाय नहीं सुझा सका है और न ही इसकी कोई वैक्सीन बन पाई है। ऐसी स्थिति में भारत में कोरोना के गहराते खतरे को देखते हुए हर किसी की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है क्योंकि भारत जैसे सवा अरब से भी अधिक आबादी वाले विकास के लिए प्रयत्नशील देश पर कोरोना का संकट कोई सामान्य बात नहीं है। कोरोना के इसी आसन्न खतरे को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक सप्ताह में दो बार राष्ट्र के नाम अपने संदेश में देशवासियों से बचाव के लिए संयम का संकल्प लेने का आवाहन किया और घरों से बाहर नहीं निकलने की अपील की है।

एक ओर जहां कोरोना का खतरा गहरा रहा है, वहीं सोशल मीडिया के जरिये कोरोना को लेकर बहुत सारी अफवाहें भी फैलाई जा रही हैं, कोरोना को लेकर मजाक बनाया जा रहा है, आज की परिस्थितियों को देखते यह सब ठीक नहीं है। सोशल मीडिया के इस तरह के दुरुपयोग पर लगातार लगाए जाने की जरूरत है। दुनियाभर के विशेषज्ञ एक स्वर में कह रहे हैं कि कोरोना की अब तक कोई वैक्सीन नहीं बनी है और न ही इसका कोई इलाज है, वहीं सोशल मीडिया के 'महाज्ञानी' लोग कोरोना को लेकर बेतुका ज्ञान बांट रहे

हैं। कोई करेले का जूस पीने से कोरोना वायरस महज दो घंटे में लुप्त हो जाने का दावा करते हुए इस संदेश को तेजी से वायरल करने को कह कर रहा है तो कोई गौमूत्र के सेवन से कोरोना से बचने की सलाह दे रहा है। इसी प्रकार कुछ लोग लहसुन, प्याज, गर्म पानी, विटामिन सी, स्टेरॉयड, शराब इत्यादि के जरिये कोरोना को भगाने की उलजुलूल सलाह दे रहे हैं। नोवेल कोरोना श्वास संबंधी रोग है और कोरोना वायरस को 75 प्रतिशत अल्कोहल छिड़कने तथा उससे साफ करने से ही मारा जा सकता है, शराब पीकर नहीं। आज के समय में सोशल मीडिया पर फैलती अफवाहों पर तत्काल प्रभाव से अंकुश लगाए जाने की सख्त जरूरत है। कई बार गलत सूचनाओं के कारण समाज में दहशत का माहौल भी बन जाता है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि देश को कोरोना के बड़े खतरे से बचाने के लिए ऐसी अफवाहों से बचते हुए केवल सरकार तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का ही पालन किया जाए। अच्छा होगा, अगर कोरोना को लेकर बेतुके ज्ञान बांटने के बजाय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का लोगों को जागरूक करने के लिए बेहतर उपयोग किया जाए।

कोरोना को लेकर बहुत सारे लोगों के मन में अभी भी यह भय व्याप्त है कि कोरोना का संक्रमण होने के पश्चात् मौत निश्चित है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। अभी तक के आंकड़े देखें तो कोरोना संक्रमण के बाद भी दुनियाभर में हजारों मरीज ठीक हो चुके हैं। हाल ही में एम्स द्वारा मरीजों के लिए जारी जागरूकता

दिशा-निर्देश पुस्तिका में स्पष्ट किया गया है कि कोरोना संक्रमित केवल 20 फीसदी मरीजों को ही अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता पड़ती है, जिनमें से कुछ को गहन चिकित्सा निगरानी कक्ष में रखना पड़ता है जबकि 80 फीसदी मरीज घर में आइसोलेशन में रहकर खुद ही ठीक हो जाते हैं। एम्स द्वारा जारी इस पुस्तिका में बताया गया है कि लोगों को कोरोना को लेकर घबराने की नहीं बल्कि सतर्क रहने और भीड़-भाड़ से बचने तथा सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों को अपनाने की जरूरत है। एम्स विशेषज्ञों के मुताबिक जिन मरीजों को उच्च रक्तचाप, डायबिटीज, कैंसर जैसे रोग हैं, उन्हें कोरोना का खतरा ज्यादा रहता है। ऐसे मरीज भीड़-भाड़ से बचें और बार-बार हाथ धोते रहें। एम्स की जागरूकता दिशा-निर्देश पुस्तिका के अनुसार कोरोना वायरस फर्श अथवा जमीन पर कितने समय तक रहता है, इसका कोई निश्चित आंकड़ा नहीं है लेकिन कुछ अध्ययनों के अनुसार फर्श पर यह वायरस कुछ घंटों से लेकर कई दिनों तक जीवित रह सकता है, जो तापमान तथा परिस्थितियों और फर्श की प्रकृति पर निर्भर करता है। पुस्तिका के मुताबिक अगर फर्श संक्रमित है तो फर्श को संक्रमण रोधी तरल पदार्थ से साफ-सुथरा रखें और सदीं जुकाम, छींक या बुखार से पीड़ित व्यक्तियों से कम से कम एक मीटर की दूरी बनाकर रहें। कोरोना से बचाव का सबसे बेहतर उपाय यही है कि साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें और भीड़भाड़ वाली जगहों के साथ-साथ अफवाहों से भी व्यापक दूरी बनाएं।

जब भी कोई प्राकृतिक संकट आता है तो कुछ देशों अथवा राज्यों तक ही सीमित रहता है लेकिन इस बार का संकट ऐसा है, जिसने विश्वभर की पूरी मानव जाति को संकट में डाल दिया है। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को अब अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि कोरोना के आसन्न खतरे को हल्के में लेना देश के लिए बेहद खतरनाक हो सकता है। दरअसल अभी तक विज्ञान कोरोना महामारी से बचने के लिए कोई निश्चित उपाय नहीं सुझा सका है और न ही इसकी कोई वैक्सीन बन पाई है। ऐसी स्थिति में भारत में कोरोना के गहराते खतरे को देखते हुए हर किसी की चिंता बढ़ना स्वाभाविक है क्योंकि भारत जैसे सवा अरब से भी अधिक आबादी वाले विकास के लिए प्रयत्नशील देश पर कोरोना का संकट कोई सामान्य बात नहीं है। कोरोना के इसी आसन्न खतरे को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक सप्ताह में दो बार राष्ट्र के नाम अपने संदेश में देशवासियों से बचाव के लिए संयम का संकल्प लेने का आवाहन किया और घरों से बाहर नहीं निकलने की अपील की है।

कोरोना को हराना है तो लॉकडाउन नियमों का पूरी तरह पालन करना ही होगा

लोग कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए अधिक से अधिक समय अपने घरों में रहें, घर में रहते हुए अच्छा भोजन लें, अच्छी नींद व योगा से अपनी इम्यूनिटी को बढ़ाएं, सोशल डिस्टेंसिंग बढ़ाएं, भीड़ में जाने से, भीड़ लगाने व एक दूसरे के संपर्क में आने से बचें।

टीरुगुडु मुरली

कोरोना वायरस के संक्रमण पर डब्ल्यूएचओ के निदेशक डॉक्टर माइकल जे रायन ने कहा है कि कोरोना वायरस (COVID 19) का भविष्य में कैसा असर रहेगा यह भारत पर निर्भर है, उन्होंने कहा कि भारत ने पहले भी ऐसे दुश्मनों को हराया है। आज विपत्ति की इस घड़ी में विश्व बेहद उम्मीदों के साथ भारत की तरफ देख रहा है। कोरोना वायरस को हराने में भारत की केंद्र व सभी राज्यों की सरकार के साथ-साथ जिम्मेदार नागरिकों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी है, क्योंकि कोरोना वायरस के संक्रमण की हमारे यहाँ पर अभी तक कम्युनिटी ट्रांसमिशन की स्टेज नहीं आई है। बचाव के उपाय करके हमको इस स्टेज को अपने प्यारे भारत देश में आने से हर हाल में रोकना है, इसलिए देश को कोरोना वायरस के संक्रमण से और खुद को व अन्य सभी लोगों को बचाने के लिए आराम से घर में रहकर भीड़भाड़ से बचाव ही इसका एक मात्र सबसे कारगर उपचार है, इस समय सरकार के द्वारा जारी किसी भी एडवाइजरी की अनदेखी करना हम सभी देशवासियों को बहुत भारी पड़ सकता है।

22 मार्च को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर जनता कर्फ्यू के दौरान देशवासियों की गम्भीरता व सजगता पूर्ण व्यवहार को देखकर लगा था कि हम सभी भारतवासी एकजुट होकर के कोरोना वायरस से जंग लड़कर संक्रमण से देश को जल्द ही मुक्त करके विश्व समुदाय के लिए एक बहुत बड़ी नज़ीर बनेंगे, अपने उचित व्यवहार, संयम व संकल्प की ताकत से हम सभी मिलकर इस वायरस के संक्रमण को देश में फैलने से जल्द ही रोकेंगे। लेकिन बेहद अफसोस चिंता, शर्म व क्षोभ की बात यह है कि 23 मार्च को देश के अलग-अलग भागों से जिस तरह की भयावह भीड़भाड़ वाली तस्वीर आयी है, उस स्थिति ने देश के कर्ताधर्ताओं को चिंता में डाल दिया है। लॉकडॉउन किये जिलों में कुछ क्षेत्रों को छोड़कर, अधिकांश में जिस तरह से गलियों में इकट्ठा होकर लोगों के जमघट को बातें बनाते देखा गया, गलियों में इकट्ठा होकर लोग खेलते देखे गये, जगह-जगह सड़कों पर वाहनों में घूमते लोग और बसों में छत तक पर ठसाठस भरे लोग नज़र आये थे, कानून को ठेंगा दिखाकर लोगों की जिस तरह की भीड़भाड़ भरे झकझोर देने वाले हालात देश में नज़र आये हैं, यह लापरवाही कोरोना वायरस के संक्रमण को देश में बेहद बड़े स्तर पर सामुदायिक स्तर पर फैलने के लिए बहुत ज्यादा मददगार साबित हो सकती है, भीड़भाड़ वाली यह स्थिति उन सभी क्षेत्रों में कोरोना वायरस को बड़े पैमाने पर फैला सकती है, जिस-जिस क्षेत्र के लोग उस भीड़ का हिस्सा थे। कुछ लोगों के द्वारा महामारी कोरोना से बचाव व सुरक्षा उपाय के नियमों की इस तरह अवहेलना की स्थिति हमारे सीमित संसाधनों वाले देश व उसके समाज के हित में ठीक नहीं है, भीड़ का हिस्सा बनने वाले लोगों की एक लापरवाही भरी हरकत ना जाने कितने लोगों की जान खतरे में डाल सकती है।

लॉकडाउन पर बनी इस भीड़भाड़ भरी हालात पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सख्त नाराजगी व्यक्त की है और अब पूरे देश में पूर्ण रूप से लॉकडाउन है।

सरकार ने देश में माल गाड़ी को छोड़कर पैसेजर ट्रेनों व कारों प्लेनों को छोड़कर यात्री हवाई सेवाओं को पूर्ण रूप से बंद कर दिया गया। अधिकांश राज्यों ने अपनी सीमाओं को पूर्ण रूप से सील कर लिया है। राज्यों में भीड़भाड़ वाली स्थिति उत्पन्न होने पर हालात पर नियंत्रण करने के लिए प्रशासन सख्ती से लोगों को लॉकडाउन का सही ढंग से पालन करने के लिए समझा रहा है और फिर भी ना मानने लोगों के वाहन सीज करके व उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज करके सख्ती से पेश आया जा रहा है। लेकिन फिर भी देश में कुछ ऐसे नादान लापरवाह कानून तोड़ने वाले



लोगों की एक ऐसी जमात तैयार हो गयी है, जिन्होंने मुश्किल से मुश्किल बुरे से बुरे हालात में भी राजी-राजी देश के नियम कानून-कायदों को ना मानने की ठानी है, वो ना तो लॉकडाउन के नियमों का पालन करने के लिए तैयार हैं, ना ही महामारी अधिनियम 1897 कानून का सम्मान करने के लिए तैयार हैं। चाहे उनके इस लापरवाही पूर्ण कृत्य से अन्य लोगों के जीवन को कितना भी बढ़ा खतरा क्यों ना उत्पन्न हो जायें, यह चंद लोगों की नासमझ जमात केवल शासन-प्रशासन की लाठी-डंडे या कानूनी मार की सख्ती के बाद ही नियम कानून-कायदों पर अमल करने के लिए तैयार होती है। पुलिस प्रशासन को लॉकडाउन में बेवजह गलियों व सड़कों पर भीड़ करने वाले ऐसे लोगों के खिलाफ अब सख्त से सख्त कार्यवाही करनी चाहिए और जानबूझकर अन्य लोगों की जान से खिलवाड़ बरतने वाले इन लोगों को कड़ा सबक सिखाकर देश की जनता को कानून पालन करने का एक अच्छा संदेश देना चाहिए।

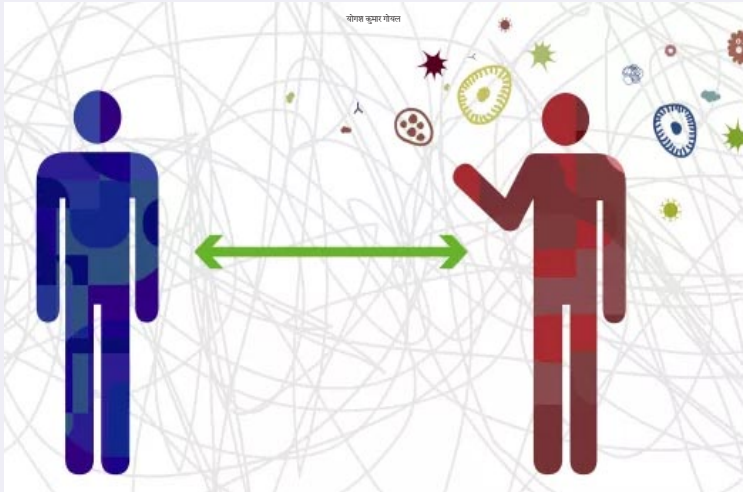
जिस तरह से कुछ लोगों की लापरवाही व जानलेवा हठधर्मिता के चलते आज देश में कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या में लगातार बहुत तेजी से इजाफा हो रहा है, वह स्थिति बेहद चिंताजनक है। अभी तक के आकड़ों की बात करे तो देश में अब तक कोरोना वायरस के संक्रमण से 10 लोगों की मौत हो चुकी है। देश में कोरोना संक्रमण की स्थिति धीरे-धीरे अब चिंताजनक होती जा रही है। विश्व में कोरोना से संक्रमण के मामले लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। दुनिया में

कोरोना वायरस ने 16558 लोगों की जान लेकर चिकित्सा वैज्ञानिकों, डब्ल्यूएचओ, यूएन से लेकर चिकित्सा जगत के सभी विश्वस्तरीय दिग्गजों को भी परेशानी में डाल दिया है। किसी को भी कोरोना वायरस के संक्रमण से लोगों को बचाने का कोई ठोस स्थाई सरल उपाय नहीं सूझ रहा है। लेकिन भयावह स्थिति में एक बहुत बड़ी खुशखबरी यह है कि दुनिया भर के लगभग 1 लाख 337 लोगों ने जानलेवा कोरोना वायरस के संक्रमण से अपने हौसले व डॉक्टरों की चिकित्सा और सलाह के बलबूते जंग जीत ली है।

केंद्र व राज्य सरकारों ने कोरोना वायरस को लेकर बार-बार अलर्ट जारी किया है कि लोग कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए अधिक से अधिक समय अपने अपने घरों में रहें, घर में रहते हुए अच्छा भोजन लें, अच्छी नींद व योगा से अपनी इम्यूनिटी को बढ़ाएं, सोशल डिस्टेंसिंग बढ़ाएं, भीड़ में जाने से, भीड़ लगाने व एक दूसरे के संपर्क में आने से बचें। क्योंकि यूरोप, यूएस, स्पेन, चीन, इटली, ईरान आदि विश्व के अन्य कोरोना प्रकोप वाले देशों की भयावह स्थिति से आज हम सभी लोगों को समय रहते ही सबक लेना होगा, क्योंकि हमको अपने 130 करोड़ की जनसंख्या वाले प्यारे भारत में कोरोना के चलते स्थित को भयावह होने से बचाना है, बेहद गम्भीर कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए हमको सरकार के द्वारा बताए बचाव उपायों का अक्षरसः पालन करके इसके प्रसार को तुरंत रोकना है।

कोरोना वायरस के संक्रमण की वैश्विक महामारी के चलते जिस तरह से आज पूरी मानव जाति पर जीवन और मृत्यु का गंभीर संकट खड़ा हो गया है। वह स्थिति विचारणीय है, उस समय हम सभी देशवासियों की यह जिम्मेदारी है कि हम पूरी सुरक्षा, गंभीरता, योग्यता और क्षमता के साथ इस चुनौती का डटकर सामना करें और खुद का बचाव करके अपने आसपास के लोगों को वायरस के संक्रमण से बचाएं। आज हम सभी देशवासियों को संकल्प लेना होगा कि हम पूर्ण सावधानी, सुरक्षा, संकल्प व संयम के साथ अपने घरों में रहकर लॉकडाउन व सरकार की एडवाइजरी का सही ढंग से पालन करके कोरोना वायरस के संक्रमण को देश में फैलाने से रोकने में सरकार की हर संभव मदद करेंगे। यहाँ आपको बता दे कि लॉकडाउन की स्थिति से हमको डरने की ज़रूरत नहीं बल्कि उसका हम सभी के भले के लिए उसका पालन करने की ज़रूरत है। क्योंकि लॉकडाउन में जीवन के लिए सभी आवश्यक सेवाओं पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है, लॉकडाउन की स्थिति से किसी भी तरह से घबराएं नहीं बल्कि नियमों का पालन करके कोरोना वायरस के संक्रमण से जंग लड़कर के उसको जल्द से जल्द देश से भगाएं और देश व सभी देशवासियों को स्वस्थ व खुशहाल बनाएं।

सोशल डिस्टेंसिंग बहुत जरूरी है, नहीं तो आपको ही नहीं देश को भी कीमत चुकानी पड़ेगी



अगर हमने अभी भी सरकार के 21 दिनों के लॉकडाउन का गंभीरता का पालन नहीं किया तो भारत को इसकी कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है, उसकी हम अभी कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री की चेतावनी को हमें बेहद संजीदगी से लेना होगा।

कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक सप्ताह के अंदर दूसरी बार 24 मार्च को राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए देशभर में 21 दिनों के सम्पूर्ण लॉकडाउन की घोषणा की है। केन्द्र सरकार द्वारा कोरोना मरीजों के इलाज तथा देश के हैल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर को और मजबूत बनाने के लिए 15 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान भी किया गया है।

प्रधानमंत्री का स्पष्ट कहना है कि आने वाले 21 दिन हमारे लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अगर इन 21 दिनों में हम सोशल डिस्टेंसिंग को अपनाते हुए अपने घर में नहीं रहे तो न केवल देश और हमारा परिवार 21 साल पीछे चला जाएगा बल्कि अनेक परिवार हमेशा-हमेशा के लिए तबाह भी हो जाएंगे। प्रधानमंत्री ने साफ शब्दों में कहा है कि 21 दिन का लॉकडाउन हालांकि लंबा समय है लेकिन लोगों के जीवन की रक्षा के लिए, उनके परिवार की रक्षा के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके मुताबिक कोरोना को फैलने से रोकना है तो इसके संक्रमण की चेन को तोड़ना ही होगा, कोरोना से बचने का इसके अलावा और कोई तरीका, कोई रास्ता नहीं है। पिछले दिनों भी राष्ट्र के नाम अपने संदेश में प्रधानमंत्री ने देश की जनता को सचेत करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा था कि जब बड़े-बड़े विकसित देशों में भी इस महामारी का व्यापक प्रभाव दिखाई दे रहा है, ऐसे में भारत पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, यह मानना गलत है।

प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में जिस प्रकार कोरोना के संक्रमण के फैलने की गति का उल्लेख किया, कम से कम उसके बाद तो देशवासियों को उनके संदेश की गहराई को समझते हुए उस पर दृढ़ता से अमल करना चाहिए। उन्होंने बताया कि शुरुआत में एक लाख लोगों के कोरोना संक्रमित होने में 67 दिन का समय लगा लेकिन उसके बाद महज 11 दिनों में ही अगले एक लाख लोग इससे संक्रमित हो गए। स्थिति कितनी भयावह है, यह इसी से स्पष्ट हो जाता है कि संक्रमितों की संख्या दो लाख से तीन लाख होने में महज 4 दिन का ही समय लगा।

प्रधानमंत्री द्वारा देश की जनता को यह स्पष्ट संदेश दिया जाना इसलिए भी बेहद जरूरी था क्योंकि 22 मार्च के जनता कर्फ्यू की सफलता के बाद कई राज्यों में सरकारों की लॉकडाउन या कर्फ्यू की घोषणा की देशभर में अनेक स्थानों पर लोगों द्वारा सरेआम धज्जियां उड़ाई गई। कोरोना के खतरे की भयावहता को हवा में उड़ाते हुए बहुत सारी जगहों पर देखा गया कि किस प्रकार सड़कों पर लोगों की बाइके, स्कूटी, कारें बेधड़क दौड़ती रहीं और बड़ी संख्या में लोग कालोनियों में आम दिनों की भांति सैर-सपाटा करते दिखते।

तमाम वैश्विक संस्थाएं बार-बार जिस प्रकार कोरोना के भयावह खतरे को लेकर सचेत कर रही हैं, ऐसे में लोगों को बेफिक्री भरी ऐसी सोच अब छोड़नी ही होगी। कोरोना के भयावह खतरे को देखते हुए प्रशासन को अब बेहद सख्त होना पड़ेगा। अगर हमने अभी भी सरकार के 21 दिनों के लॉकडाउन का गंभीरता का पालन नहीं किया तो भारत को इसकी कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है, उसकी हम अभी कल्पना भी नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री की इस चेतावनी को हमें बेहद संजीदगी से लेना होगा कि कुछ लोगों की लापरवाही, कुछ लोगों की गलत सोच, आपको, आपके बच्चों को, आपके माता-पिता को, आपके परिवार को, आपके दोस्तों को, पूरे देश को बहुत बड़ी मुश्किल में झोंक देगी।

अगर हमने अभी भी इन चेतावनियों, इन संदेशों की गंभीरता को नहीं समझा तो समझ लें कि फिर इतनी देर हो जाएगी कि हमें संभलने का अवसर भी नहीं मिलेगा। इसलिए हम भले ही कितने ही स्वस्थ हों, कोरोना को परास्त करने के लिए अगले 21 दिनों के लिए घर में बैठना शेष पृष्ठ ६ पर....

पृष्ठ ५ का शेष... सोशल डिस्टेंसिंग ...

हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। दरअसल कोरोना अब सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट में तब्दील हो चुका है, ऐसे में हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपना, अपने परिजनों और आसपास के लोगों का ख्याल रखें और तमाम सरकारी दिशा-निर्देशों का दृढ़ता से पालन कर एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक होने का परिचय दें।

कोरोना की भयावहता को देखें तो तीन महीने पहले चीन के वुहान शहर से शुरू हुआ इसका कहर इन तीन महीनों के अंदर देखते ही देखते दुनियाभर के 197 देशों में से 190 से अधिक देशों तक पहुंच गया है और इससे संक्रमितों की संख्या चार लाख से भी अधिक हो चुकी है, 18 हजार के करीब लोगों की मौत हो चुकी है।

भारत में भी संक्रमितों का आंकड़ा बढ़ी तेजी से बढ़ रहा है। खतरे का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पिछले दो सप्ताह में ही देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या करीब 12 गुना हो गई है। 10 मार्च को जहां देश में कोरोना मरीजों की संख्या 50 थी, वहीं 24 मार्च तक यह 600 के आसपास पहुंच गई। देशभर में करीब डेढ़ लाख लोग इस समय निगरानी में हैं, जिनमें से केरल में ही इनकी संख्या अस्सी हजार से ज्यादा है। वैश्विक संकट की इस घड़ी में देश के प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह कोरोना को लेकर किसी भी प्रकार की अफवाह फैलाने या संशय की स्थिति उत्पन्न करने में सहभागी न बने।

प्रधानमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा भी है कि ऐसे समय में जाने-अनजाने कई बार अफवाहें फैलती हैं, इसलिए किसी भी तरह की अफवाह और अंधविश्वास से बचते हुए इस बीमारी के लक्षणों के दौरान डॉक्टरों की सलाह के बिना कोई भी दवा न लें।

चिंता की स्थिति यही है कि हम कोरोना संक्रमण के तीसरे चरण के मुहाने पर खड़े हैं और अगर भारत इस चरण में प्रवेश कर गया तो देश की आबादी के घनत्व को देखते हुए उसके बाद स्थिति को भयावह होने में देर नहीं लगेगी। इसलिए प्रधानमंत्री के संदेश के बाद देश के प्रत्येक नागरिक को इस खतरे को संजीदगी से समझ लेना चाहिए कि कोरोना के आसन्न खतरे को हल्के में लेना देश के साथ-साथ हमारे अपने परिवार के लिए भी कितना खतरनाक हो सकता है। दरअसल अभी तक विज्ञान कोरोना महामारी से बचने के लिए कोई निश्चित उपाय नहीं सुझा सका है और न ही इसकी कोई वैक्सीन ही बनी है।

ऐसे में कोरोना से बचने का केवल एक ही रास्ता है कि हम सरकार तथा स्वास्थ्य एजेंसियों के सभी दिशा-निर्देशों का पालन करें और सोशल डिस्टेंसिंग के ज़रूरी उपाय को अपनाएं। सोशल डिस्टेंसिंग को लेकर प्रधानमंत्री ने बिल्कुल स्पष्ट किया है कि कुछ लोग इस गलतफहमी में हैं कि यह केवल बीमार लोगों के लिए ही ज़रूरी है लेकिन लोगों की यह सोच सही नहीं है। सोशल डिस्टेंसिंग प्रत्येक नागरिक, प्रत्येक परिवार और परिवार के हर सदस्य के लिए है। कोरोना के कहर से त्रस्त सभी देशों के दो महीनों के अध्ययनों के निष्कर्षों तथा तमाम विशेषज्ञों के अनुसार कोरोना से प्रभावी मुकाबले के लिए यही एकमात्र विकल्प है। बहरहाल, अब कोरोना को लेकर बेपरवाह रहने और इसके आसन्न खतरे को नजरअंदाज करने की नहीं बल्कि ज़रूरत है प्रत्येक देशवासी को कोरोना के भारत पर मंडराते बड़े खतरे को लेकर सजग और सतर्क रहने की।

जनसंख्या नियंत्रण कानून वक्त की जरूरत, सिंधवी के विधेयक को समर्थन मिलना चाहिए

नैरव कुमार दत्त

हम 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख रहे हैं और इसे लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ रहे हैं लेकिन यह तभी संभव है जब प्रति व्यक्ति आय बढ़े। देश की कुल आय से सही समृद्धि नहीं आयेगी हमें हर व्यक्ति को खुशहाल बनाना होगा।



देश में संसाधन सीमित हैं लेकिन आबादी बेहद तेजी से बढ़ती जा रही है। हर साल बढ़ते बेरोजगारी के आंकड़े दर्शा रहे हैं कि हालात ऐसे ही रहे तो स्थिति कभी भी विस्फोटक हो सकती है। देखा जाये तो 1951 में भारत की आबादी 10 करोड़ 38 लाख थी जो साल 2011 में बढ़कर 121 करोड़ के पार पहुंच गयी और साल 2025 तक इसके बढ़कर 150 करोड़ के पार पहुंचने का अनुमान है। दरअसल जनसंख्या गुनांक में बढ़ती है जबकि संसाधनों में वृद्धि की दर बहुत धीमी होती है। वाकई अब समय आ गया है जब देश को जनसंख्या नियंत्रण कानून की सख्त जरूरत है।

इस दिशा में पूर्व में भी सांसदों ने कई प्रयास किये हैं, मंत्रियों ने बयान दिये हैं लेकिन अब एक गंभीर पहल के साथ आये हैं कांग्रेस सांसद अभिषेक मनु सिंघवी। वह राज्यसभा में एक प्राइवेट मेंबर बिल पेश करने जा रहे हैं जिसमें दो बच्चा नीति को लागू करने का प्रस्ताव किया गया है। सिंधवी का प्रस्ताव है कि दो बच्चा नीति को मानने वालों को प्रोत्साहन और ना मानने वालों को हतोत्साहित या सुविधाओं से वंचित किया जाना चाहिए। सिंधवी निजी आधार पर 'हम दो हमारे दो' नीति वाला जो विधेयक पेश करने जा रहे हैं उसको सदन में पेश करने के लिए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपनी मंजूरी प्रदान कर दी है। अब देखना होगा कि सरकार का इस निजी विधेयक पर क्या रुख रहता है।

जहाँ तक अभिषेक मनु सिंघवी के Population Control Bill, 2020 की बात है तो इसमें प्रस्ताव किया गया है कि दो बच्चा नीति का पालन नहीं करने वालों को चुनाव

लड़ने, सरकारी सेवाओं में प्रोन्नति लेने, सरकारी योजनाओं या सबसिडी का लाभ लेने, बीपीएल श्रेणी में सूचीबद्ध होने और समूह 'क' यानि Group A की नौकरियों के लिए आवेदन करने से रोका जाना चाहिए। विधेयक में यह भी प्रस्ताव किया गया है कि केंद्र सरकार को राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरीकरण फंड की स्थापना करनी चाहिए ताकि जो लोग दो बच्चा नीति का पालन करना चाहते हैं उनकी मदद की जा सके। इसके अलावा सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर गर्भनिरोधकों को उचित दर पर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

अभिषेक मनु सिंघवी का यह विधेयक यह भी प्रस्ताव करता है कि जिन दंपति का एक ही बच्चा है और उन्होंने अपनी नसबंदी भी करा ली है उन्हें सरकार की ओर से विशेष प्रोत्साहन दिये जाने चाहिए जैसे उनके बच्चे को उच्च शिक्षण संस्थानों और सरकारी नौकरियों में वरीयता दी जाये। ऐसे दंपति जो गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर कर रहे हैं यदि वह स्वतः ही नसबंदी करा लेते हैं तो केंद्र उन्हें एकमुश्त रकम के माध्यम से मदद करे जिसमें अगर उस दंपति का एक ही बच्चा अगर लड़का है तो उन्हें 60 हजार रुपये और यदि वह एक ही बच्चा लड़की है तो एक लाख रुपए दिये जाएं।

जहाँ तक विधेयक में दो बच्चा नीति का पालन नहीं करने वालों को हतोत्साहित करने की बात है तो सिंधवी का विधेयक प्रस्ताव करता है कि ऐसे दंपतियों पर लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा, पंचायत और किसी भी निकाय का चुनाव लड़ने पर रोक लगा देनी चाहिए। उन्हें सरकारी सेवाओं में प्रमोशन नहीं देना चाहिए, केंद्र और राज्य सरकारों की ग्रुप ए की नौकरियों में आवेदन करने

का हक नहीं होना चाहिए और यदि वह गरीबी रेखा से नीचे के हैं तो उन्हें कोई भी सरकारी सबसिडी नहीं मिलनी चाहिए।

यह विधेयक यह भी प्रस्ताव करता है कि इसके लागू होने के बाद केंद्र सरकार के कर्मचारियों को लिखित में यह भी देना चाहिए कि वह दो बच्चा नीति का पूरी तरह से पालन करेंगे। जिन कर्मचारियों के पहले से ही दो से ज्यादा बच्चे हैं वह भी लिखित में यह देंगे कि वह अब और बच्चे नहीं पैदा करेंगे। केंद्र सरकार को भी नियुक्तियों के समय उन्हीं लोगों को वरीयता देनी चाहिए जिनके दो या उससे कम बच्चे हों। सरकारी कर्मचारियों के बच्चों में यदि कोई दिव्यांग है या कोई अन्य ऐसी परिस्थिति है कि तीसरा बच्चा आवश्यक है तो ही उसे विधेयक में प्रस्तावित किये गये नियमों के तहत छूट मिलेगी। विधेयक में प्रस्ताव किया गया है कि दो बच्चा नीति का पालन जो भी सरकारी कर्मचारी नहीं करेगा उसकी सेवाएं समाप्त भी की जा सकती हैं।

बहरहाल, सिंधवी उन कुछ नेताओं में शुमार हैं जो देश की बढ़ती जनसंख्या को लेकर चिंतित हैं और देश आगे जाकर विकट स्थिति में ना फँस जाये इसके लिए अभी से कोई उपचार चाहते हैं। संसद के वर्तमान बजट सत्र में ही भाजपा सांसद हरनाथ सिंह यादव ने जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग करते हुए इसे समय की जरूरत बताया और कहा कि वर्तमान में ही सभी को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना संभव नहीं हो रहा है जबकि जब आबादी 150 करोड़ के पार पहुंच जाएगी तब पीने का पानी मिलेगा ही नहीं। इससे पहले राज्यसभा में 7 फरवरी को शिवसेना सांसद अनिल देसाई ने जनसंख्या पर नियंत्रण

अभिषेक मनु सिंघवी का यह विधेयक यह भी प्रस्ताव करता है कि जिन दंपति का एक ही बच्चा है और उन्होंने अपनी नसबंदी भी करा ली है उन्हें सरकार की ओर से विशेष प्रोत्साहन दिये जाने चाहिए जैसे उनके बच्चे को उच्च शिक्षण संस्थानों और सरकारी नौकरियों में वरीयता दी जाये। ऐसे दंपति जो गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर कर रहे हैं यदि वह स्वतः ही नसबंदी करा लेते हैं तो केंद्र उन्हें एकमुश्त रकम के माध्यम से मदद करे जिसमें अगर उस दंपति का एक ही बच्चा अगर लड़का है तो उन्हें 60 हजार रुपये और यदि वह एक ही बच्चा लड़की है तो एक लाख रुपए दिये जाएं।

करने के लिए संविधान संशोधन का प्रस्ताव रखा और कहा कि सरकार के द्वारा छोटे परिवार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पिछले साल जुलाई में भाजपा के राज्यसभा सांसद राकेश सिन्हा ने भी सदन में जनसंख्या नियंत्रण को लेकर प्राइवेट मेंबर बिल पेश किया था। लोकसभा में भी यह मुद्दा कई बार उठ चुका है। पिछले साल नवंबर में भाजपा सांसद अजय भट्ट ने 'छोटे परिवार को अपना कर जनसंख्या नियंत्रण' बिल रखा था। 2016 में भी भाजपा के एक सांसद लोकसभा में जनसंख्या नियंत्रण पर प्राइवेट बिल लेकर आए थे।

बहरहाल, विश्व में आबादी के मामले में भारत अभी दूसरे नंबर पर खड़ा है और यदि तरक्की की रफ्तार यही रही तो जल्द ही हम चीन को पछाड़ देंगे। हम 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का सपना देख रहे हैं और इसे लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ रहे हैं लेकिन यह तभी संभव है जब प्रति व्यक्ति आय बढ़े। देश की कुल आय से सही समृद्धि नहीं आयेगी हमें हर व्यक्ति को खुशहाल बनाना होगा और ऐसा तभी हो सकता है जब कल्याणकारी योजनाओं और देश के संसाधनों पर जनसंख्या का भारी बोझ नहीं हो। यह अच्छी बात है कि जनसंख्या नियंत्रण को लेकर देश की दो बड़ी पार्टियों के समान विचार हैं अब सरकार को भी चाहिए कि वह इस दिशा में आगे बढ़े।

परिवार का कब्जा बना रहे, इसके लिए पूरी कांग्रेस को ही दाँव पर लगा दिया है

संविदा

कांग्रेस को आज जो बिखरावमूलक स्थिति देखने को मिल रही है, उससे न केवल वह अपना राष्ट्रीय धरातल खो रही है बल्कि धीरे-धीरे कुछ राज्यों में सिमटती जा रही है। ज़्यादा वह स्वयं ही अपनी गलत नीतियों एवं पूर्वाग्रहों के कारण कांग्रेस-मुक्त भारत की ओर नहीं बढ़ रही है ?



कांग्रेस पार्टी में यह मर्ज आज का नहीं, बहुत पुराना है, लेकिन आज केन्द्रीय नेतृत्व की लगातार कमजोर होती स्थितियों के कारण वह विकराल रूप लेता जा रहा है। मध्य प्रदेश में कमलनाथ की सरकार ने बहुमत परीक्षण से पहले ही मैदान छोड़ दिया। उनकी सरकार का पतन तभी सुनिश्चित हो गया था, जब ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपनी लगातार उपेक्षाओं के चलते भाजपा में जाने का निर्णय लिया, संभवतः उनके जैसा असंतोष एवं पार्टी नीतियों से मतभेद अन्य नेताओं में भी पनप रहा है, जो निकट भविष्य में सामने फट सकता है। लेकिन इस बड़ी घटना से भी पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व ने कोई सबक लिया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। राहुल ने यह तो माना कि ज्योतिरादित्य को कांग्रेस में अपना भविष्य नहीं दिख रहा था, लेकिन यह नहीं बताया कि ऐसा क्यों था ? पार्टी के कर्ता-धर्ता माने जाने वाले राहुल को यह बताना चाहिए था कि ज्योतिरादित्य सरीखे उसके नेताओं को कांग्रेस में अपना भविष्य बेहतर क्यों नहीं दिखा ?

राजनीति हमेशा नए चैलेंज पैदा करती रहती है, इसलिए इन चुनौतियों से पार पाने के लिये नए लीडर्स की हर राजनीतिक दल को आवश्यकता है। जो भी राजनीतिक दल इसकी तैयारी में रहता है, वह आने वाले संकटों से पार पा लेता है, लेकिन देश की सबसे प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी कांग्रेस नये लीडर्स तैयार करने एवं पहले से स्थापित कद्दावर नेताओं की उपेक्षा के कारण दिनोंदिन अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को खो रही है। ज्योतिरादित्य सिंधिया का कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होना एक ऐसी ही विडम्बनापूर्ण घटना है, जिससे एक बार फिर कांग्रेस कमजोर हुई है। आखिर इस बात पर बहस क्यों नहीं होती कि योग्य, युवा और प्रतिबद्ध कांग्रेसियों को पार्टी क्यों छोड़नी पड़ रही है ? कांग्रेस की वर्तमान दुर्दशा के लिये जिम्मेदार तत्वों पर बहस होना पार्टी ही नहीं बल्कि लोकतंत्र की जीवन्तता के लिये भी ज़रूरी है।

कांग्रेस की बेहतरी की उम्मीद के लिये ज़रूरी है कि मौजूदा लीडर्स पर ऐसा सिस्टम लागू करने के लिए दबाव बनाएँ, जो तटस्थ होकर अपना काम करते रहें, उन्हें उनकी योग्यता के अनुरूप प्रोत्साहन एवं पद प्राप्त होते रहे। ऐसा नहीं होने पर पार्टी की टूटन एवं बिखराव स्वाभाविक है। कांग्रेस को आज जो बिखरावमूलक स्थिति देखने को मिल रही है, उससे न केवल वह अपना राष्ट्रीय धरातल खो रही है बल्कि धीरे-धीरे कुछ राज्यों में सिमटती जा रही है। क्या वह स्वयं ही अपनी गलत नीतियों एवं पूर्वाग्रहों के कारण कांग्रेस-मुक्त भारत की ओर नहीं बढ़ रही है ? क्या जिन लोगों ने अपने खून-पसीने से कांग्रेस को खड़ा-बड़ा किया, वे एक व्यक्ति और परिवार के लिए उसे दाँव पर इसी तरह लगातार लगाते रहेंगे ?

कांग्रेस पार्टी में यह मर्ज आज का नहीं, बहुत पुराना है, लेकिन आज केन्द्रीय नेतृत्व की लगातार कमजोर होती स्थितियों के कारण वह विकराल रूप लेता जा रहा है। मध्य प्रदेश में कमलनाथ की सरकार ने बहुमत परीक्षण से पहले ही मैदान छोड़ दिया। उनकी सरकार का

पतन तभी सुनिश्चित हो गया था, जब ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपनी लगातार उपेक्षाओं के चलते भाजपा में जाने का निर्णय लिया, संभवतः उनके जैसा असंतोष एवं पार्टी नीतियों से मतभेद अन्य नेताओं में भी पनप रहा है, जो निकट भविष्य में सामने फट सकता है। लेकिन इस बड़ी घटना से भी पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व ने कोई सबक लिया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। राहुल ने यह तो माना कि ज्योतिरादित्य को कांग्रेस में अपना भविष्य नहीं दिख रहा था, लेकिन यह नहीं बताया कि ऐसा क्यों था ? पार्टी के कर्ता-धर्ता माने जाने वाले राहुल को यह बताना चाहिए था कि ज्योतिरादित्य सरीखे उसके नेताओं को कांग्रेस में अपना भविष्य बेहतर क्यों नहीं दिखा ? जो नेता कांग्रेस छोड़ रहे हैं, वे यही कह रहे हैं कि गांधी परिवार समय रहते सही निर्णय नहीं ले पा रहा है। यह दिख भी रहा है। बड़ा कारण तो यही है कि अनेक दिग्गज नेता गांधी परिवार की जी-हुजूरी करते हुए ऊब गये हैं।

बात ज्योतिरादित्य की ही नहीं है, पूर्व में ऐसी अनिर्णय, उपेक्षा, उचित प्रोत्साहन एवं पद न मिलने एवं स्पष्ट नीतियों के अभाव की स्थितियों में अनेक कांग्रेसी नेता पार्टी से विमुख होते रहे हैं, उनकी कांग्रेस निष्ठा भी तार-तार होती हुई देखी गयी है, भले ही ओडिशा में बीजू पटनायक, उत्तर प्रदेश में चौधरी चरण सिंह, रीता बहुगुणा जोशी और जगदंबिका पाल, महाराष्ट्र में शरद पवार, बंगाल में ममता बनर्जी, आंध्र में जगन मोहन रेड्डी, तमिलनाडु में जयंती नटराजन, तेलंगाना में के. चंद्रशेखर राव, असम में हिमंत बिस्व सरमा आदि नेताओं की लंबी सूची है, जो कांग्रेस छोड़ गए। प्रश्न यह है कि यदि कोई राष्ट्रीय पार्टी अनेक राज्यों में अपने नेताओं को खोती जाए, तो उसका जनाधार बचेगा कैसे ? कैसे वह अपने राष्ट्रीय अस्तित्व को बचा पाएगी ? नरेन्द्र मोदी के जादुई प्रभाव से अधिक यह पार्टी अपनी स्वयं के कारणों एवं नीतियों के कारण धराशायी हो रही है।

कांग्रेस पार्टी नेतृत्व संकट से गुजर रही है।

पार्टी अगर केन्द्रीय लीडरशिप की कमी से मुरझा रही है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि पार्टी के पास ऐसे लीडर नहीं हैं, बल्कि यह है कि उसने अपने भीतर उचित लीडरशिप को जगह देने की सोच ही विकसित करना छोड़ दिया है, वह यह नहीं सोच एवं समझ पा रही कि दूरगामी राजनीति के लिए प्रत्येक स्तर पर योग्य, जनप्रिय और स्थापित नेतृत्व होना चाहिए, पर नेतृत्व निर्माण के लिए लोकतांत्रिक और संस्थागत स्वरूप तो विकसित करना ही होगा, जिसमें प्रत्येक सदस्य को अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर हो। नेतृत्व कोई ऐसी शक्ति नहीं जो रातोंरात बन जाए। उसके लिए पार्टी के पास योग्य, जनप्रिय नेताओं की लंबी सप्लाइ-लाइन होनी ही चाहिए, पार्टी में ऐसे योग्य एवं प्रतिभासम्पन्न नेताओं की लम्बी लाइन रही है, लेकिन आज यह लाइन सिकुड़ रही है, तो पार्टी को इसके कारणों पर चिन्तन करना ही चाहिए। क्या कांग्रेस इसके लिए कोशिश कर रही है ? राष्ट्रीय, प्रांतीय, शहरी और ग्रामीण स्तर पर क्या पार्टी संगठन और युवा नेतृत्व को लेकर गंभीर है ? लीडरशिप कोई अद्भुत घटना नहीं है। इसे मापा-तोला और यहां तक कि पैदा भी किया जा सकता है। लेकिन इसके लिये नयी मानसिकता की जरूरत है, पूर्वाग्रहों को त्यागना होगा, लीडरशिप को बहुत तवज्जो देनी ही होगी है। नया लोकतांत्रिक आइडिया तो ये है कि किसी एक महान लीडर के मुकाबले हर किसी में लीडरशिप की थोड़ी-बहुत क्रांति हो तो बेहतर होगा और ऐसे बेहतर लीडर को उचित सम्मान एवं प्रोत्साहन दिया जाना ज़रूरी है। अगर पार्टी इस लोकतांत्रिक राय पर चले तो लीडरशिप को लेकर कई गलतफहमियां दूर हो जाएंगी।

राहुल को अध्यक्ष पद छोड़े आठ माह बीते चुके हैं, लेकिन कांग्रेस के नए अध्यक्ष का पता नहीं। राहुल के उपाध्यक्ष और अध्यक्ष रहते कांग्रेस का ग्राफ लगातार गिरा ही है। इसके लिए गांधी परिवार ही जिम्मेदार है। यह परिवारवाद की पराकाष्ठा ही है कि गांधी परिवार पार्टी पर अपना आधिपत्य बनाए रखने पर आमादा है। गांधी परिवार की ओर से

कांग्रेस को अपनी निजी जागीर की तरह संचालित करने के कारण ही बीते कुछ समय में कई नेताओं ने पार्टी छोड़ी है। जबकि यह पार्टी किसी परिवार की जागीर नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आधार है। एक परिवार के आग्रहों के कारण पार्टी की भविष्य में तस्वीर और ज्यादा बिगड़ सकती है, जो लोकतंत्र के लिये भी चिन्तनीय स्थिति है। पार्टी सचमुच नेताओं के विमुख होने के कारणों से छुटकारा पाना चाहे तो उसे जवाबदेह बनना होगा और खुलेपन की पॉलिसी लागू करनी होगी। केन्द्रीय नेतृत्व में नये चेहरों को आगे लाना ही होगा। लेकिन इसकी संभावनाओं का ना होना पार्टी के अस्तित्व पर संकट को ही उजागर करता है। उसे यह देखना होगा कि उसके अपने नेता खुद को उपेक्षित न महसूस करें और वह इस आक्षेप से बची रहे कि सत्ता के लिए हर तरह के समझौते कर रही है और अपने गांधी परिवार के आग्रहों को त्यागने की तैयारी में नहीं है।

गांधी परिवार के साथ-साथ बड़ा दोष कांग्रेस के बड़े नेताओं का भी है। ऐसी कौन-सी मजबूरी है, जो किसी को भी पार्टी की इस दुर्दशा पर अपनी आवाज उठाने नहीं देती ? पार्टी छोड़ना तो आसान विकल्प है, लेकिन पार्टी के अंदर रहकर पार्टी की कमजोरियों और बुराइयों से लड़ना और उसे सही मार्ग पर ले जाना बहुत कठिन है, इस कठिन डगर पर पार्टी के नेता नहीं चल पा रहे हैं तो यह उनकी अन्दरूनी स्थिति है। लेकिन कांग्रेस के नेताओं को यह सोचना ही होगा कि सोनिया और राहुल गांधी यदि पार्टी को आगे नहीं ले जा पा रहे तो राष्ट्रीय नेतृत्व को कैसे पुनर्परिभाषित किया जाए ? वे राज्य स्तर पर भी नेतृत्व को तरजीह नहीं दे पा रहे हैं। क्यों राज्यों के मुख्यमंत्री, अन्य मंत्री या संगठन के पदाधिकारी शीर्ष नेतृत्व की कृपा पर आश्रित होते हैं ? स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी क्यों कांग्रेस में आज तक आंतरिक लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो पाई है ? बड़े छोटे नेताओं के साथ-साथ आम कांग्रेसी तो बिल्कुल हाशिये पर चला गया है। कोई भी राष्ट्रीय पार्टी बिना नेतृत्व, संगठन और विचारधारा के कैसे अपनी अस्मिता बचा सकती है ?

(कहानी)

प्रेरणा



मेरी कक्षा में सूर्यप्रकाश से ज्यादा ऊधामी कोई लड़का न था, बल्कि यों कहो कि अध्यापन-काल के दस वर्षों में मुझे ऐसी विषम प्रकृति के शिष्य से साबका न पड़ा था। कपट-क्रीड़ा में उसकी जान बसती थी। अध्यापकों को बनाने और चिढ़ाने, उद्योगी बालकों को छेड़ने और रुलाने में ही उसे आनन्द आता था। ऐसे-ऐसे षडयंत्र रचता, ऐसे-ऐसे फंदे डालता, ऐसे-ऐसे बंधन बाँधता कि देखकर आश्चर्य होता था। गिरोहबंदी में अभ्यस्त था। खुदाई फौजदारों की एक फौज बना ली थी और उसके आतंक से शाला पर शासन करता था। मुख्य अधिष्ठाता की आज्ञा टल जाय, मगर क्या मजाल कि कोई उसके हुक्म की अवज्ञा कर सके। स्कूल के चपरासी और अर्दली उससे थर-थर काँपते थे। इन्स्पेक्टर का मुआइना होने वाला था, मुख्य अधिष्ठाता ने हुक्म दिया कि लड़के निर्दिष्ट समय से आधा घंटा पहले आ जायें। मतलब यह था कि लड़कों को मुआइने के बारे में कुछ जरूरी बातें बता दी जायें, मगर दस बज गये, इन्स्पेक्टर साहब आकर बैठ गये, और मदरसे में एक लड़का भी नहीं। ग्यारह बजे सब छात्र इस तरह निकल पड़े, जैसे कोई पिंजरा खोल दिया गया हो। इन्स्पेक्टर साहब ने कैफियत में लिखा डिंसिप्लिन बहुत खराब है। प्रिंसिपल साहब की किरकिरी हुई, अध्यापक बदनाम हुए और यह सारी शरारत सूर्यप्रकाश की थी, मगर बहुत पूछ-ताछ करने पर भी किसी ने सूर्यप्रकाश का नाम तक न लिया। मुझे अपनी संचालन-विधि पर गर्व था। ट्रेनिंग कालेज में इस विषय में मैंने ख्याति प्राप्त की थी, मगर यहाँ मेरा सारा संचालन-कौशल जैसे मोर्चा खा गया था। कुछ अक्ल ही काम न करती कि शैतान को कैसे सन्मार्ग पर लायें।

कई बार अध्यापकों की बैठक हुई, पर यह गिरह न खुली। नई शिक्षा-विधि के अनुसार मैं दंडनीति का पक्षपाती न था, मगर यहाँ हम इस नीति से केवल इसलिए विरक्त थे कि कहीं उपचार से भी रोग असाध्य न हो जाय। सूर्यप्रकाश को स्कूल से निकाल देने का प्रस्ताव भी किया गया, पर इसे अपनी अयोग्यता का प्रमाण समझकर हम इस नीति

का व्यवहार करने का साहस न कर सके। बीस-बाईस अनुभवी और शिक्षाशास्त्र के आचार्य एक बारह-तेरह साल के उर्दंड बालक का सुधार न कर सकें, यह विचार बहुत ही निराशाजनक था। यों तो सारा स्कूल उससे त्राहि-त्राहि करता था, मगर सबसे ज्यादा संकट में मैं था, क्योंकि वह मेरी कक्षा का छात्र था और उसकी शरारतों का कुफल मुझे भोगना पड़ता था। मैं स्कूल आता, तो हरदम यही खटका लगा रहता था कि देखें आज क्या विपत्ति आती है। एक दिन मैंने अपनी मेज की दराज खोली, तो उसमें से एक बड़ा-सा मेंढक निकल पड़ा। मैं चौंककर पीछे हटा तो क्लास में एक शोर मच गया। उसकी ओर सरोष नेत्रों से देखकर रह गया। सारा घंटा उपदेश में बीत गया और वह पट्टा सिर झुकाये नीचे मुस्करा रहा था। मुझे आश्चर्य होता था कि यह नीचे की कक्षाओं में कैसे पास हुआ था।

एक दिन मैंने गुस्से से कहा, -तुम इस कक्षा से उम्र भर नहीं पास हो सकते।

सूर्यप्रकाश ने अविचलित भाव से कहा, -आप मेरे पास होने की चिन्ता न करें। मैं हमेशा पास हुआ हूँ और अबकी भी हूँगा।

असम्भव !

असम्भव सम्भव हो जायगा !

मैं आश्चर्य से उसका मुँह देखने लगा। जहीन से जहीन लड़का भी अपनी सफलता का दावा इतने निर्विवाद रूप से न कर सकता था। मैंने सोचा, वह प्रश्न-पत्र उड़ा लेता होगा। मैंने प्रतिज्ञा की, अबकी इसकी एक चाल भी न चलने दूँगा। देखूँ, कितने दिन इस कक्षा में पड़ा रहता है। आप घबड़ाकर निकल जायगा।

वार्षिक परीक्षा के अवसर पर मैंने असाधारण देखभाल से काम लिया; मगर जब सूर्यप्रकाश का उत्तर-पत्र देखा, तो मेरे विस्मय की सीमा न रही। मेरे दो पच्चे थे, दोनों ही में उसके नम्बर कक्षा में सबसे अधिक थे। मुझे खूब मालूम था कि वह मेरे किसी पच्चे का कोई

प्रश्न भी हल नहीं कर सकता। मैं इसे सिद्ध कर सकता था; मगर उसके उत्तर-पत्रों को क्या करता ! लिपि में इतना भेद न था जो कोई संदेह उत्पन्न कर सकता। मैंने प्रिंसिपल से कहा, तो वह भी चकरा गये; मगर उन्हें भी जान-बूझकर मक्खी निगलनी पड़ी। मैं कदाचित् स्वभाव ही से निराशावादी हूँ। अन्य अध्यापकों को मैं सूर्यप्रकाश के विषय में जरा भी चिंतित न पाता था। मानो ऐसे लड़कों का स्कूल में आना कोई नई बात नहीं, मगर मेरे लिए वह एक विकट रहस्य था। अगर यही ढंग रहे, तो एक दिन या तो जेल में होगा, या पागलखाने में।

उसी साल मेरा तबादला हो गया। यद्यपि यहाँ का जलवायु मेरे अनुकूल था, प्रिंसिपल और अन्य अध्यापकों से मैत्री हो गई थी, मगर मैं अपने तबादले से खुश हुआ; क्योंकि सूर्यप्रकाश मेरे मार्ग का काँटा न रहेगा। लड़कों ने मुझे बिदाई की दावत दी और सब-के-सब स्टेशन तक पहुँचाने आये। उस वक्त सभी लड़के आँखों में आँसू भरे हुए थे। मैं भी अपने आँसुओं को न रोक सका। सहसा मेरी निगाह सूर्यप्रकाश पर पड़ी, जो सबसे पीछे लज्जित खड़ा था। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उसकी आँखें भी भीगी थीं। मेरा जी बार-बारचाहता था कि चलते-चलते उससे दो-चार बातें कर लूँ। शायद वह भी मुझसे कुछ कहना चाहता था, मगर न मैंने पहले बातें कीं, न उसने; हालाँकि मुझे बहुत दिनों तक इसका खेद रहा। उसकी झिझक तो क्षमा के योग्य थी; पर मेरा अवरोध अक्षम्य था। संभव था, उस करुणा और ग्लानि की दशा में मेरी दो-चार निष्कपट बातें उसके दिल पर असर कर जातीं; मगर इन्हीं खोये

हुए अवसरों का नाम तो जीवन है। गाड़ी मंदगति से चली। लड़के कई कदम तक उसके साथ दौड़े। मैं खिड़की के बाहर सिर निकाले खड़ा था। कुछ देर मुझे उनके हिलते हुए रूमाल नजर आये। फिर वे रेखाएं आकाश में विलीन हो गईं = मगर एक अल्पकाय मूर्ति अब भी प्लेटफार्म पर खड़ी थी। मैंने अनुमान किया, वह सूर्यप्रकाश है। उस समय मेरा हृदय किसी विकल कैदी की भाँति घृणा,

मालिन्य और उदासीनता के बंधनों को तोड़-तोड़कर उसके गले मिलने के लिए तड़प उठा।

नये स्थान की नई चिन्ताओं ने बहुत जल्द मुझे अपनी ओर आकर्षित कर लिया। पिछले दिनों की याद एक हसरत बनकर रह गई। न किसी का कोई खत आया, न मैंने कोई खत लिखा। शायद दुनिया का यही दस्तूर है। वर्षा के बाद वर्षा की हरियाली कितने दिनों रहती है। संयोग से मुझे इंग्लैण्ड में विद्याभ्यास करने का अवसर मिल गया। वहाँ तीन साल लग गये। वहाँ से लौटा तो एक कालेज का प्रिंसिपल बना दिया गया। यह सिद्धि मेरे लिए बिलकुल आशातीत थी। मेरी भावना स्वप्न में भी इतनी दूर न उड़ी थी; किन्तु पदलिप्सा अब किसी और भी ऊँची डाली पर आश्रय लेना चाहती थी।

शिक्षामंत्री से रब्त-जब्त पैदा किया। मंत्री महोदय मुझ पर कृपा रखते थे; मगर वास्तव में शिक्षा के मौलिक सिद्धांतों का उन्हें ज्ञान न था। मुझे पाकर उन्होंने सारा भार मेरे ऊपर डाल दिया। घोड़े पर वह सवार थे, लगाम मेरे हाथ में थी। फल यह हुआ कि उनके राजनैतिक विपक्षियों से मेरा विरोध हो गया। मुझ पर जा-बेजा आक्रमण होने लगे। मैं सिद्धान्त रूप से अनिवार्य शिक्षा का विरोधी हूँ। मेरा विचार है कि हर एक मनुष्य की उन विषयों में ज्यादा स्वाधीनता होनी चाहिए, जिनका उससे निज का संबंध है। मेरा विचार है कि यूरोप में अनिवार्य शिक्षा की जरूरत है, भारत में नहीं। भौतिकता पश्चिमी सभ्यता का मूल तत्त्व है। वहाँ किसी काम की प्रेरणा, आर्थिक लाभ के आधार पर होती है। जिन्दगी की जरूरत ज्यादा है; इसलिए जीवन-संग्राम भी अधिक भीषण है। माता-पिता भोग के दास होकर बच्चों को जल्द-से-जल्द कुछ कमाने पर मजबूर करते हैं। इसकी जगह कि वह मद का त्याग करके एक शिलिंग रोज की बचत कर लें, वे अपने कमसिन बच्चे को एक शिलिंग की मजदूरी करने के लिए दबायेंगे। भारतीय जीवन में सात्विक सरलता है। हम उस वक्त तक अपने बच्चों से मजदूरी नहीं कराते, जब तक कि परिस्थिति हमें विवश न कर दे। दरिद्र से दरिद्र हिंदुस्तानी मजदूर

मैं गरीब की बीवी था, मुझे ही सबकी मामी बनना पड़ा। मुझे देशद्रोही, उन्नति का शत्रु और नौकरशाही का गुलाम कहा, गया। मेरे कालेज में जरा-सी भी कोई बात होती तो कौंसिल में मुझ पर वर्षा होने लगती। मैंने एक चपरासी को पृथक् किया। सारी कौंसिल पंजे झाड़कर मेरे पीछे पड़ गई। आखिर मिनिस्टर साहब को मजबूर होकर उस चपरासी को बहाल करना पड़ा। यह अपमान मेरे लिए असह्य था। शायद कोई भी इसे सहन न कर सकता।

मिनिस्टर साहब से मुझे शिकायत नहीं। वह मजबूर थे। हाँ, इस वातावरण में काम करना मेरे लिए दुस्साध्य हो गया। मुझे अपने कालेज के आन्तरिक संगठन का भी अधिकार नहीं। अमुक ज्यों नहीं परीक्षा में मेजा गया, अमुक के बदले अमुक को ज्यों नहीं छात्रवृत्ति दी गई, अमुक अध्यापक को अमुक कक्षा ज्यों नहीं दी जाती, इस तरह के सारहीन आक्षेपों ने मेरी नाक में दम कर दिया था। इस नई चोट ने कमर तोड़ दी। मैंने इस्तीफा दे दिया।

इतिहास और भूगोल के पोथे चाटकर और यूरोप के विद्यालयों की शरण जाकर भी मैं अपनी ममता को न मिटा सका; बल्कि यह रोग दिन-दिन और भी असाध्य होता जाता था। आप सीढ़ियों पर पाँव रखे बगैर छत की ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकते। सज्जड़ की अट्टालिका तक पहुँचने में दूसरों की जिंदगी ही जीनों का काम देती है। आप कुचलकर ही लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। वहाँ सौजन्य और सहानुभूति का स्थान ही नहीं। मुझे ऐसा मालूम होता है कि उस वक्त मैं हिंस्त्र जंतुओं से घिरा हुआ था और मेरी सारी शक्तियाँ अपनी आत्मरक्षा में ही लगी रहती थीं। यहाँ मैं अपने चारों ओर संतोष और सरलता देखता हूँ। मेरे पास जो लोग आते हैं, कोई स्वार्थ लेकर नहीं आते और न मेरी सेवाओं में प्रशंसा या गौरव की लालसा है। यह कहकर मैंने सूर्यप्रकाश के चेहरे की ओर गौर से देखा। कपट मुसकान की जगह ग्लानि का रंग था। शायद यह दिखाने आया था कि आप जिसकी तरफ से इतने निराश हो गये थे, वह अब इस पद को सुशोभित कर रहा है।

वह मुझसे अपने सदुद्योग का बखान कराना चाहता था। मुझे अब अपनी भूल मालूम हुई। एक संपन्न आदमी के सामने समृद्धि की निंदा उचित नहीं।

भी शिक्षा के उपकारों का कायल है। उसके मन में यह अभिलाषा होती है कि मेरा बच्चा चार अक्षर पढ़ जाय। इसलिए नहीं कि उसे कोई अधिकार मिलेगा; बल्कि केवल इसलिए कि विद्या मानवी शील का एक श्रृंगार है। अगर यह जानकर भी वह अपने बच्चे को मदरसे नहीं भेजता, तो समझ लेना चाहिए कि वह मजबूर है। ऐसी दशा में उस पर कानून का प्रहार करना मेरी दृष्टि में न्याय-संगत नहीं है। इसके सिवाय मेरे विचार में अभी हमारे देश में योग्य शिक्षकों का अभाव है। अर्ध-शिक्षित और अल्पवेतन पानेवाले अध्यापकों से आप यह आशा नहीं रख सकते कि वह कोई ऊँचा आदर्श अपने सामने रख सकें। अधिक-से-अधिक इतना ही होगा कि चार-पाँच वर्ष में बालक को अक्षर-ज्ञान हो जायगा। मैं इसे पर्वत खोदकर चुहिया निकालने के तुल्य समझता हूँ। वयस प्राप्त हो जाने पर यह मसला एक महीने में आसानी से तय किया जा सकता है।

मैं अनुभव से कह सकता हूँ कि युवावस्था में हम जितना ज्ञान एक महीने में प्राप्त कर सकते हैं, उतना बाल्यावस्था में तीन साल में भी नहीं कर सकते, फिर खामख्वाह बच्चों को मदरसे में कैद करने से क्या लाभ ? मदरसे के बाहर रहकर उसे स्वच्छ वायु तो मिलती, प्राकृतिक अनुभव तो होते। पाठशाला में बन्द करके तो आप उसके मानसिक और शारीरिक दोनों विधानों की जड़ काट देते हैं। इसलिए जब प्रान्तीय व्यवस्थापक-सभा में अनिवार्य शिक्षा का प्रस्ताव पेश हुआ, तो मेरी प्रेरणा से मिनिस्टर साहब ने उसका विरोध किया। नतीजा यह हुआ कि प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया। फिर क्या था। मिनिस्टर साहब की ओर मेरी वह ले-दे शुरू हुई कि कुछ न पूछिए। व्यक्तिगत आक्षेप किए जाने लगे। मैं गरीब की बीवी था, मुझे ही सबकी भाभी बनना पड़ा। मुझे देशद्रोही, उन्नति का शत्रु और नौकरशाही का गुलाम कहा, गया। मेरे कालेज में जरा-सी भी कोई बात होती तो कौंसिल में मुझ पर वर्षा होने लगती। मैंने एक चपरासी को पृथक् किया। सारी कौंसिल पंजे झाड़कर मेरे पीछे पड़ गई। आखिर मिनिस्टर साहब को मजबूर होकर उस चपरासी को बहाल करना पड़ा। यह अपमान मेरे लिए असह्य था। शायद कोई भी इसे सहन न कर सकता। मिनिस्टर साहब से मुझे शिकायत नहीं। वह मजबूर थे। हाँ, इस वातावरण में काम करना मेरे लिए दुस्साध्य हो गया। मुझे अपने कालेज के आन्तरिक संगठन का भी अधिकार नहीं। अमुक क्यों नहीं परीक्षा में भेजा गया, अमुक के बदले अमुक को क्यों नहीं छात्रवृत्ति दी गई, अमुक अध्यापक को अमुक कक्षा क्यों नहीं दी जाती, इस तरह के सारहीन आक्षेपों ने मेरी नाक में दम कर दिया था। इस नई चोट ने कमर तोड़ दी। मैंने इस्तीफा दे दिया।

मुझे मिनिस्टर साहब से इतनी आशा अवश्य थी कि वह कम-से-कम इस विषय में न्याय-परायणता से काम लेंगे; मगर उन्होंने न्याय की जगह नीति को मान्य समझा और मुझे कई साल की भर्त्ता का यह फल मिला कि मैं पदच्युत कर दिया गया। संसार का ऐसा कटु अनुभव मुझे अब तक न हुआ था। ग्रह भी कुछ बुरे आ गये थे, उन्हीं दिनों पत्नी का देहान्त हो गया। अन्तिम दर्शन भी न कर सका। सन्ध्या-समय नदी-तट पर सैर करने गया था। वह कुछ अस्वस्थ थीं। लौटा, तो उनकी लाश मिली। कदाचित् हृदय की गति

बन्द हो गई थी। इस आघात ने कमर तोड़ दी। माता के प्रसाद और आशीर्वाद से बड़े-बड़े महान् पुरुष कृतार्थ हो गये हैं। मैं जो कुछ हुआ, पत्नी के प्रसाद और आशीर्वाद से हुआ; वह मेरे भाग्य की विधात्री थीं। कितना अलौकिक त्याग था, कितना विशाल धैर्य। उनके माधुर्य में तीक्ष्णता का नाम भी न था। मुझे याद नहीं आता कि मैंने कभी उनकी भृकुटी संकुचित देखी हो, वह निराश होना तो जानती ही न थीं। मैं कई बार सख्त बीमार पड़ा हूँ। वैद्य निराश हो गये हैं, पर वह अपने धैर्य और शांति से अणु-मात्र भी विचलित नहीं हुई। उन्हें विश्वास था कि मैं अपने पति के जीवन-काल में मरूँगी और वही हुआ भी। मैं जीवन में अब तक उन्हीं के सहारे खड़ा था ! जब वह अवलम्ब ही न रहा, तो जीवन कहाँ रहता। खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है, सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का। यह लगन गायब हो गई। मैं संसार से विरक्त हो गया। और एकान्तवास में

जीवन के दिन व्यतीत करने का निश्चय करके एक छोटे-से गाँव में जा बसा। चारों तरफ ऊँचे-ऊँचे टीले थे, एक ओर गंगा बहती



थी। मैंने नदी के किनारे एक छोटा-सा घर बना लिया और उसी में रहने लगा। मगर काम करना तो मानवी स्वभाव है। बेकारी में जीवन कैसे कटता। मैंने एक छोटी-सी पाठशाला खोल ली; एक वृक्ष की छाँह में गाँव के लड़कों को जमा कर कुछ पढ़ाया करता था। उसकी यहाँ इतनी ख्याति हुई कि आस-पास के गाँव के छात्र भी आने लगे। एक दिन मैं अपनी कक्षा को पढ़ा रहा था कि पाठशाला के पास एक मोटर आकर रुकी और उसमें से उस जिले के डिप्टी कमिश्नर उतर पड़े। मैं उस समय केवल एक कुर्ता और धोती पहने हुए था। इस वेश में एक हाकिम से मिलते हुए शर्म आ रही थी। डिप्टी कमिश्नर मेरे समीप आये तो मैंने झेंपते हुए हाथ बढ़ाया, मगर वह मुझसे हाथ मिलाने के बदले मेरे पैरों की ओर झुके और उन पर सिर रख दिया। मैं कुछ ऐसा सिटपिटा गया कि मेरे मुँह से एक शब्द भी न निकला। मैं अँगरेजी अच्छी लिखता हूँ, दर्शनशास्त्र का भी आचार्य हूँ, व्याख्यान भी अच्छे दे लेता हूँ। मगर इन गुणों में एक भी श्रृद्धा के योग्य नहीं। श्रृद्धा तो ज्ञानियों और साधुओं ही के अधिकार की वस्तु है। अगर मैं ब्राह्मण होता, तो एक बात थी। हालाँकि एक सिविलियन का किसी ब्राह्मण के पैरों पर सिर रखना अचिंतनीय है। मैं अभी इसी विस्मय में पड़ा हुआ था कि डिप्टी कमिश्नर ने सिर उठाया और मेरी तरफ देखकर कहा, आपने शायद मुझे पहचाना नहीं।

इतना सुनते ही मेरे स्मृति-नेत्र खुल गये, बोला, -आपका नाम सूर्यप्रकाश तो नहीं है ?

-जी हाँ, मैं आपका वही अभागा शिष्य हूँ। -बारह-तेरह वर्ष हो गये।

सूर्यप्रकाश ने मुस्कराकर कहा, -अध्यापक लड़कों को भूल जाते हैं, पर लड़के उन्हें हमेशा याद रखते हैं।

मैंने उसी विनोद के भाव से कहा, -तुम जैसे लड़कों को भूलना असंभव है।

सूर्यप्रकाश ने विनीत स्वर में कहा, -उन्हीं अपराधों को क्षमा कराने के लिए सेवा में आया हूँ। मैं सदैव आपकी खबर लेता रहता था। जब आप इंग्लैण्ड गये, तो मैंने आपके लिए बधाई का पत्र लिखा; पर उसे भेज न सका। जब आप प्रिंसिपल हुए, मैं इंग्लैण्ड जाने को तैयार था। वहाँ मैं पत्रिकाओं में आपके लेख पढ़ता रहता था। जब लौटा, तो मालूम हुआ कि आपने इस्तीफा दे दिया और कहीं देहात में चले गये हैं। इस जिले में आये हुए मुझे एक वर्ष से अधिक हुआ; पर इसका जरा भी अनुमान न था कि आप यहाँ एकांत-सेवन कर रहे हैं। इस उजाड़ गाँव में आपका जी कैसे लगता है ? इतनी ही अवस्था में आपने

और सहानुभूति का स्थान ही नहीं। मुझे ऐसा मालूम होता है कि उस वक्त मैं हिंस्त्र जंतुओं से घिरा हुआ था और मेरी सारी शक्तियाँ अपनी आत्मरक्षा में ही लगी रहती थीं। यहाँ मैं अपने चारों ओर संतोष और सरलता देखता हूँ। मेरे पास जो लोग आते हैं, कोई स्वार्थ लेकर नहीं आते और न मेरी सेवाओं में प्रशंसा या गौरव की लालसा है। यह कहकर मैंने सूर्यप्रकाश के चेहरे की ओर गौर से देखा। कपट मुसकान की जगह ग्लानि का रंग था। शायद यह दिखाने आया था कि आप जिसकी तरफ से इतने निराश हो गये थे, वह अब इस पद को सुशोभित कर रहा है। वह मुझसे अपने सदुद्योग का बखान कराना चाहता था। मुझे अब अपनी भूल मालूम हुई। एक संपन्न आदमी के सामने समृद्धि की निंदा उचित नहीं। मैंने तुरन्त बात पलटकर कहा, मगर तुम अपना हाल तो कहो। तुम्हारी यह काया-पलट कैसे हुई ? तुम्हारी शरारतों को याद करता हूँ तो अब भी रोएँ खड़े हो जाते हैं। किसी देवता के वरदान के सिवा और तो कहीं यह विभूति न प्राप्त हो सकती थी।

सूर्यप्रकाश ने मुसकराकर कहा, -आपका आशीर्वाद था। मेरे बहुत आग्रह करने पर सूर्यप्रकाश ने अपना वृत्तांत सुनाना शुरू किया आपके चले आने के कई दिन बाद मेरा ममेरा भाई स्कूल में दाखिल हुआ। उसकी उम्र आठ-नौ साल से ज्यादा न थी। प्रिंसिपल साहब उसे होस्टल में न लेते थे और न मामा साहब उसके ठहरने का प्रबन्ध कर सकते थे। उन्हें इस संकट में देखकर मैंने प्रिंसिपल साहब से कहा, उसे मेरे कमरे में ठहरा दीजिये। प्रिंसिपल साहब ने इसे नियम-विरुद्ध बतलाया। इस पर मैंने बिगड़कर उसी दिन होस्टल छोड़ दिया और एक किराये का मकान लेकर मोहन के साथ रहने लगा। उसकी माँ कई साल पहले मर चुकी थी। इतना दुबला-पतला, कमजोर और गरीब लड़का था कि पहले ही दिन से मुझे उस पर दया आने लगी। कभी उसके सिर में दर्द होता, कभी ज्वर हो आता।

वानप्रस्थ ले लिया ?

मैं नहीं कह सकता कि सूर्यप्रकाश की उन्नति देखकर मुझे कितना आश्चर्यमय आनंद हुआ। अगर वह मेरा पुत्र होता तो भी इससे अधिक आनंद न होता। मैं उसे अपने झोंपड़े में लाया और अपनी रामकहा, नी कह सुनाई। सूर्यप्रकाश ने कहा, -तो यह कहिए कि आप अपने ही एक भाई के विश्वासघात के शिकार हुए। मेरा अनुभव तो अभी बहुत कम है; मगर इतने ही दिनों में मुझे मालूम हो गया है, कि हम लोग अभी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना नहीं जानते। मिनिस्टर साहब से भेंट हुई तो पूछूँगा, कि यही आपका धर्म था।

मैंने जवाब दिया-भाई, उनका दोष नहीं। संभव है, इस दशा में मैं भी वही करता, जो उन्होंने किया। मुझे अपनी स्वार्थलिप्सा की सजा मिल गई, और उसके लिए मैं उनका ऋणी हूँ। बनावट नहीं, सत्य कहता हूँ कि यहाँ मुझे जो शांति है, वह और कहीं न थी। इस एकान्त-जीवन में मुझे जीवन के तत्त्वों का वह ज्ञान हुआ, जो संपत्ति और अधिकार की दौड़ में किसी तरह संभव न था। इतिहास और भूगोल के पोथे चाटकर और यूरोप के विद्यालयों की शरण जाकर भी मैं अपनी ममता को न मिटा सका; बल्कि यह रोग दिन-दिन और भी असाध्य होता जाता था। आप सीढ़ियों पर पाँव रखे बगैर छत की ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकते। सम्पत्ति की अट्टालिका तक पहुँचने में दूसरों की जिंदगी ही जीनों का काम देती है। आप कुचलकर ही लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। वहाँ सौजन्य

आये दिन कोई-न-कोई बीमारी खड़ी रहती थी। इधर साँझ हुई और झपकियाँ आने लगीं। बड़ी मुश्किल से भोजन करने उठता। दिन चढ़े तक सोया करता और जब तक मैं गोद में उठाकर बिठा न देता, उठने का नाम न लेता। रात को बहुधा चौककर मेरी चारपाई पर आ जाता। मेरे गले से लिपटकर सोता। मुझे उस पर कभी क्रोध न आता। कह नहीं सकता, क्यों मुझे उससे प्रेम हो गया। मैं जहाँ पहले नौ बजे सोकर उठता था, अब तड़के उठ बैठता और उसके लिए दूध गरम करता। फिर उसे उठाकर हाथ-मुँह धुलाता और नाश्ता कराता। उसके स्वास्थ्य के विचार से नित्य वायु सेवन को ले जाता। मैं जो कभी किताब लेकर न बैठता था, उसे घंटों पढ़ाया करता। मुझे अपने दायित्व का इतना ज्ञान कैसे हो गया, इसका मुझे आश्चर्य है। उसे कोई शिकायत हो जाती तो मेरे प्राण नखों में समा जाते। डाक्टर के पास दौड़ता, दवाएँ लाता और मोहन की खुशामद करके दवा पिलाता। सदैव यह चिंता लगी रहती थी, कि कोई बात उसकी इच्छा के विरुद्ध न हो जाय। इस बेचारे का यहाँ मेरे सिवा दूसरा कौन है। मेरे चंचल मित्रों में से कोई उसे चिढ़ाता या छेड़ता तो मेरी त्योरियाँ बदल जाती थीं ! कई लड़के तो मुझे बूढ़ी दाई कहकर चिढ़ाते थे; पर मैं हँसकर टाल देता था। मैं उसके सामने एक अनुचित शब्द भी मुँह से न निकालता। यह शंका होती थी, कि कहीं मेरी देखा-देखी यह भी खराब न हो

पृष्ठ ९ का शेष...प्रेरणा....

जाय। मैं उसके सामने इस तरह रहना चाहता था, कि वह मुझे अपना आदर्श समझे और इसके लिए यह मानी हुई बात थी कि मैं अपना चरित्र सुधारूँ। वह मेरा नौ बजे सोकर उठना, बारह बजे तक मटरगश्ती करना, नई-नई शरारतों के मंसूबे बाँधना और अध्यापकों की आँख बचाकर स्कूल से उड़ जाना, सब आप-ही-आप जाता रहा। स्वास्थ्य और चरित्र पालन के सिध्दांतों का मैं शत्रु था; पर अब मुझसे बढ़कर उन नियमों का रक्षक दूसरा न था। मैं ईश्वर का उपहास किया करता, मगर अब पक्का आस्तिक हो गया था। वह बड़े सरल भाव से पूछता, परमात्मा सब जगह रहते हैं, तो मेरे पास भी रहते होंगे। इस प्रश्न का मजाक उड़ाना मेरे लिए असंभव था। मैं कहता हूँ परमात्मा तुम्हारे, हमारे सबके पास रहते हैं और हमारी रक्षा करते हैं।

यह आश्वासन पाकर उसका चेहरा आनन्द से खिल उठता था, कदाचित् वह परमात्मा की सत्ता का अनुभव करने लगता था। साल ही भर मैं मोहन कुछ से कुछ हो गया। मामा साहब दोबारा आये, तो उसे देखकर चकित हो गये। आँखों में आँसू भरकर बोले -बेटा ! तुमने इसको जिला लिया, नहीं तो मैं निराश हो चुका था। इसका पुनीत फल तुम्हें ईश्वर देंगे। इसकी माँ स्वर्ग में बैठी हुई तुम्हें आशीर्वाद दे रही है। सूर्यप्रकाश की आँखें उस वक्त भी सजल हो गई थीं।

मैंने पूछा-मोहन भी तुम्हें बहुत प्यार करता होगा ?

सूर्यप्रकाश के सजल नेत्रों में हसरत से भरा हुआ आनन्द चमक उठा,-बोला, वह मुझे एक मिनट के लिए भी न छोड़ता था। मेरे साथ बैठता, मेरे साथ खाता, मेरे साथ सोता। मैं ही उसका सबकुछ था। आह ! वह संसार में नहीं है। मगर मेरे लिए वह अब भी उसी तरह जीता-जागता है। मैं जो कुछ हूँ, उसी का बनाया हुआ हूँ। अगर वह दैवी विधान की भाँति मेरा पथ-प्रदर्शक न बन जाता, तो शायद आज मैं किसी जेल में पड़ा होता। एक दिन मैंने कह दिया था अगर तुम रोज नहा न लिया करोगे तो मैं तुमसे न बोलूँगा। नहाने से वह न जाने क्यों जी चुराता था। मेरी इस धमकी का फल यह हुआ कि वह नित्य प्रातःकाल नहाने लगा। कितनी ही सर्दी क्यों न हो, कितनी ही ठंडी हवा चले; लेकिन वह स्नान अवश्य करता था। देखता रहता था, मैं किस बात से खुश होता हूँ। एक दिन मैं कई मित्रों के साथ थियेटर देखने चला गया, ताकीद कर गया था कि तुम खाना खाकर सो रहना।

तीन बजे रात को लौटा, तो देखा कि वह बैठा हुआ है ! मैंने पूछा,-तुम सोये नहीं ? बोला, नींद नहीं आई।

उस दिन से मैंने थियेटर जाने का नाम न लिया। बच्चों में प्यार की जो एक भूख होती है दूध, मिठाई और खिलौनों से भी ज्यादा मादक जो माँ की गोद के सामने संसार की निधि की भी परवाह नहीं करती, मोहन की वह भूख कभी संतुष्ट न होती थी। पहाड़ों से टकराने वाली सारस की आवाज की तरह वह सदैव उसकी नसों में गूँजा करती थी। जैसे भूमि पर फैली हुई लता कोई सहारा पाते ही उससे चिपट जाती है, वही हाल मोहन का था। वह मुझसे ऐसा चिपट गया था कि पृथक् किया जाता, तो उसकी कोमल बेल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते। वह मेरे साथ तीन साल रहा और तब मेरे जीवन में प्रकाश की एक रेखा डालकर अन्धकार में विलीन हो गया। उस जीर्ण काया में कैसे-कैसे अरमान भरे हुए थे। कदाचित् ईश्वर ने मेरे जीवन में एक अवलम्ब की सृष्टि करने के लिए उसे भेजा

था। उद्देश्य पूरा हो गया तो वह क्यों रहता। गर्मियों की तातील थी। दो तातीलों में मोहन मेरे ही साथ रहा था। मामाजी के आग्रह करने पर भी घर न आया। अबकी कालेज के छात्रों ने काश्मीर-यात्रा करने का निश्चय किया और मुझे उसका अध्यक्ष बनाया। काश्मीर यात्रा की अभिलाषा मुझे चिरकाल से थी। इसी अवसर को गनीमत समझा। मोहन को मामाजी के पास भेजकर मैं काश्मीर चला गया। दो महीने के बाद लौटा, तो मालूम हुआ मोहन बीमार है। काश्मीर में मुझे बार-बार मोहन की याद आती थी और जी चाहता था, लौट जाऊँ। मुझे उस पर इतना प्रेम है, इसका अन्दाज मुझे काश्मीर जाकर हुआ; लेकिन मित्रों ने पीछा न छोड़ा। उसकी बीमारी की खबर पाते ही मैं अधीर हो उठा और दूसरे ही दिन उसके पास जा पहुँचा। मुझे देखते ही उसके पीले और सूखे हुए चेहरे पर आनन्द की स्फूर्ति झलक पड़ी। मैं दौड़कर उसके गले से लिपट गया। उसकी आँखों में वह दूरदृष्टि और चेहरे पर वह अलौकिक आभा थी जो मँडराती हुई मृत्यु की सूचना देती है। मैंने आवेश से काँपते हुए स्वर में पूछा, यह तुम्हारी क्या दशा है मोहन ? दो ही महीने में यह नौबत पहुँच गई? मोहन ने सरल मुस्कान के साथ कहा,-आप काश्मीर की सैर करने गये थे, मैं आकाश की सैर करने जा रहा हूँ।

-मगर यह दुःख की कहानी कहकर मैं रोना और रुलाना नहीं चाहता। मेरे चले जाने के बाद मोहन इतने परिश्रम से पढ़ने लगा मानो तपस्या कर रहा हो। उसे यह धुन सवार हो गई थी कि साल भर की पढ़ाई दो महीने में समाप्त कर ले और स्कूल खुलने के बाद मुझसे इस श्रम का प्रशंसारूपी उपहार प्राप्त करे। मैं किस तरह उसकी पीठ ठोकूँगा, शाबाशी दूँगा, अपने मित्रों से बखान करूँगा, इन भावनाओं ने अपने सारे बालोचित उत्साह और तल्लीनता से उसे वशीभूत कर लिया। मामाजी को दफ्तर के कामों से इतना अवकाश कहाँ कि उसके मनोरंजन का ध्यान रखें। शायद उसे प्रतिदिन कुछ-न-कुछ पढ़ते देखकर वह दिल में खुश होते थे। उसे खेलते देखकर वह जरूर डौटते। पढ़ते देखकर भला क्या कहते। फल यह हुआ कि मोहन को हल्का-हल्का ज्वर आने लगा, किन्तु उस दशा में भी उसने पढ़ना न छोड़ा। कुछ और व्यतिक्रम भी हुए, ज्वर का प्रकोप और भी बढ़ा; पर उस दशा में भी ज्वर कुछ हल्का हो जाता, तो किताबें देखने लगता था। उसके प्राण मुझमें ही बने रहते थे। ज्वर की दशा में भी नौकरों से पूछता भैया का पत्र आया? वह कब आयेंगे? इसके सिवा और कोई दूसरी अभिलाषा न थी। अगर मुझे मालूम होता कि मेरी काश्मीर-यात्रा इतनी महँगी पड़ेगी, तो उधर जाने का नाम भी न लेता। उसे बचाने के लिए मुझसे जो कुछ हो सकता था, वह मैंने सब किया; किन्तु बुखार टाइफाइड था, उसकी जान लेकर ही उतरा। उसके जीवन के स्वप्न मेरे लिए किसी ऋषि के आशीर्वाद बनकर मुझे प्रोत्साहित करने लगे और यह उसी का शुभ फल है कि आज आप मुझे इस दशा में देख रहे हैं। मोहन की बाल अभिलाषाओं को प्रत्यक्ष रूप में लाकर यह मुझे संतोष होता है कि शायद उसकी पवित्र आत्मा मुझे देखकर प्रसन्न होती हो। यही प्रेरणा थी कि जिसने कठिन से कठिन परीक्षाओं में भी मेरा बेड़ा पार लगाया; नहीं तो मैं आज भी वही मंदबुद्धि सूर्यप्रकाश हूँ, जिसकी सूरत से आप चिढ़ते थे।

उस दिन से मैं कई बार सूर्यप्रकाश से मिल चुका हूँ। वह जब इस तरफ आ जाता है, तो बिना मुझसे मिले नहीं जाता। मोहन को अब भी वह अपना इष्टदेव समझता है। मानव-प्रकृति का यह एक ऐसा रहस्य है, जिसे मैं आज तक नहीं समझ सका।



एक घटना मुझे बहुत प्रीतिकर है। एक बहुत बड़ा मेला लगा हुआ है। और उस मेले के पास ही एक कुएं में एक आदमी गिर पड़ा है और वह चिल्ला रहा है--कि मुझे निकाल लो, मुझे बाहर निकाल लो। मैं डूब रहा हूँ, मैं डूबा जा रहा हूँ।

वह किसी तरह ईंटों को पकड़े हुए है, किसी तरह संभले हुए है। कुंआ गहरा है, और वह आदमी तैरना नहीं जानता है। लेकिन मेले में बहुत शोरगुल है, किसको सुनायी पड़े। लेकिन एक बौद्ध भिक्षु उस कुएं के पास से निकला है, पानी पीने को झुका है। नीचे से आवाज आ रही है। उसके झुककर नीचे देखा। वह आदमी चिल्लाते लगा, कि भिक्षुजी मुझे बाहर निकाल लें। मैं मरा जा रहा हूँ। कोई उपाय करें। अब मेरे हाथ भी छूटे जा रहे हैं।

उस भिक्षु ने कहा, क्यों व्यर्थ परेशान हो रहे हो निकलने के लिए। जीवन एक दुख है। भगवान ने कहा है, जीवन दुख है। बुद्ध ने कहा है, जीवन दुख है। जीवन तो एक पीड़ा है। निकलकर भी क्या करोगे? सब तरफ दुख ही दुख है। फिर भगवान ने यह भी कहा है कि जीवन में जो भी होता है, वह पिछले जन्मों के कर्म-फल के कारण होता है। तुमने किसी को किसी जन्म में गिराया होगा कुएं में। इसलिए तुम भी गिरे हो। अपना फल भोगना ही पड़ता है। फल को भोग लो तो कर्म के जाल से मुक्त हो जाओगे। अब व्यर्थ निकलने की कोशिश मत करो। वह भिक्षु तो पानी पीकर आगे बढ़ गया!

उस भिक्षु ने गलत बातें नहीं कहीं। जो शास्त्रों में लिखा है, वही कहा। वह जानता था। वह सामने मरता हुआ आदमी उसे दिखायी नहीं पड़ा, क्योंकि बीच में उसके जाने हुए शास्त्र आ गये! वह आदमी डूब रहा है, वह उसे दिखायी नहीं पड़ रहा है। उसे कर्म का सिद्धांत दिखायी पड़ रहा है! उसे जीवन की असरता दिखायी पड़ रही है! वह उस आदमी को उपदेश देकर आगे बढ़ गया! उपदेशक से ज्यादा कठोर कोई भी नहीं होता।

वह आगे जा भी नहीं पाया है कि पीछे से एक कनफ्यूशियन मांक, एक कनफ्यूशियस को मानने वाला संन्यासी आ गया। उसने भी आवाज सुनी। उसने भी झांककर देखा है।

उसने कहा, मेरे मित्र, कनफ्यूशियस ने अपनी किताब में लिखा हुआ है कि हर कुएं के ऊपर घाट होना चाहिए, पाट होना चाहिए; दीवाल होनी चाहिए, ताकि कोई गिर न सके। इस कुएं पर दीवाल नहीं है, इसलिए तुम गिर गये। हम तो कितने दिन से समझाते फिरते हैं गांव-गांव कि जो कनफ्यूशियस ने कहा है, वही होना चाहिए। तुम घबराओ मत, मैं जाकर आंदोलन करूँगा। मैं लोगों को समझाऊँगा। हम राजा के पास जायेंगे। हम कहेंगे कि कनफ्यूशियस ने कहा है कि हर कुएं पर दीवाल होनी चाहिए, ताकि कोई गिर न सके। तुम्हारे राज्य में दीवालें नहीं हैं, लोग गिर रहे हैं।

उसने कहा कि -वह सब ठीक है। लेकिन तब तक मैं मर जाऊँगा। पहले मुझे निकाल लो।

उस आदमी ने कहा,-तुम्हारा सवाल नहीं है। यह तो जनता-जनार्दन का सवाल है। एक आदमी के मरने-जीने से कोई फर्क नहीं पड़ता। सबके लिए सवाल है। तुम अपने को धन्य समझो कि तुमने आंदोलन

अध्यात्म

मनुष्य और मनुष्य के बीच ज्ञान की दीवालें हैं

की शुरुआत करवा दी! तुम शहीद हो!

वह आदमी डूबता रहा, वह आदमी चिल्लाता रहा और वह कनफ्यूशियस को मानने वाला भिक्षु जाकर मंच पर खड़ा हो गया। उसने मेले में हजारों लोग इकट्ठे कर लिए और उसने कहा कि देखो, जब तक कुओं पर पाट नहीं बनता, तब तक मनुष्य-जाति को बहुत दुख झेलने पड़ेंगे। हर कुएं पर पाट होना चाहिए। अच्छे राज्य का यह लक्षण है। कनफ्यूशियस ने किताब में लिखा हुआ है। वह अपनी किताब खोलकर लोगों को दिखा रहा है!

वह आदमी चिल्ला ही रहा है। लेकिन उस मेले में कौन सुने? एक ईसाई पादरी वहां से गुजरा है। नीचे से आवाज उसने सुनी है, उसने जल्दी से अपने कपड़े उतारे! अपनी झोले में से रस्सी निकाली! वह अपने झोले में रस्सी रखे हुए था! उसने रस्सी नीचे फेंकी, वह कूदा कुएं में, उस आदमी को निकालकर बाहर लाया।

उस आदमी ने कहा,-तुम ही एक आदमी मुझे दिखायी पड़े। एक बौद्ध भिक्षु निकल गया उपदेश देता हुआ, एक कनफ्यूशियस को मानने वाला भिक्षु निकल गया! आंदोलन चलाने चला गया है! वह देखो मंच पर खड़ा हुआ, आंदोलन चला रहा है! तुम्हारी बड़ी कृपा है, तुमने बहुत अच्छा किया।

वह ईसाई मिशनरी हंसने लगा। उसने कहा,-कृपा मेरी तुम पर नहीं, तुम्हारी मुझ पर है। तुम कुएं में न गिरते तो मैं पुण्य से वंचित रहता। जोसस क्राइस्ट ने कहा है पता नहीं? सर्विस--सेवा ही परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग है, मैं परमात्मा को खोज रहा हूँ। मैं इसी तलाश में रहता हूँ कि कहीं कोई कुएं में गिर पड़े तो मैं कूद जाऊँ। कहीं कोई बीमार हो जाये तो मैं सेवा करूँ, कहीं किसी की आंखें फूट जायें तो मैं दवा ले आऊँ, कहीं कोई कोढ़ी हो जायें तो मैं इलाज करूँ। मैं तो इसी कोशिश में घूमता-फिरता हूँ, इसलिए रस्सी हमेशा अपने पास रखता हूँ कि कहीं कोई कुएं में गिर जाये! तुमने मुझ पर कृपा की है, क्योंकि बिना सेवा के मोक्ष पाने का कोई उपाय नहीं है। हमेशा ऐसी ही कृपा बनाये रखना, ताकि हम मोक्ष जा सकें। हमारी किताब में लिखा हुआ है।

उस आदमी ने सोचा होगा कि शायद इसने मुझ पर दया की है तो वह गलती में था। इस आदमी से किसी को भी मतलब नहीं है! यह आदमी किसी को दिखायी नहीं पड़ता! सबकी अपनी किताबें हैं, अपने सिद्धांत हैं। सबका अपना ज्ञान है।

मनुष्य और मनुष्य के बीच ज्ञान की दीवालें हैं! मनुष्य और वृक्षों के बीच ज्ञान की दीवालें हैं! मनुष्य और समुद्रों के बीच ज्ञान की दीवालें हैं! मनुष्य और परमात्मा के बीच ज्ञान की दीवालें हैं!

साधक को ज्ञान की दीवाल बड़ी बेरहमी से तोड़ देनी चाहिए, गिरा देनी चाहिए। एक-एक इट गिरा देनी चाहिए जानने की और ऐसे खड़े हो जाना चाहिए, जैसे मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। तो तो जीवन से संबंध हो सकता है, अन्यथा नहीं। तो तो हम जुड़ सकते हैं, तो तो इसी क्षण संवाद हो सकता है। इसी क्षण संबंध हो सकता है--इसी क्षण। कौन रोकता है फिर, फिर कौन बाधा देने को है?

सिनेमा

स्वरा ने सुनाई हिमांशू से ब्रेकअप की पूरी कहानी

जब दोनों ही अपने रास्ते
ना हिलने की सोच रहे
हो तो रिश्ते नहीं बच
पाते। स्वरा के अनुसार
उनके और हिमांशू के
रिश्ते में किसी ने किसी
को धोखा नहीं दिया।



बॉलीवुड अभिनेत्री स्वरा भास्कर ने पूरे एक साल बाद अपने और हिमांशू शर्मा के बीच हुए ब्रेकअप पर खुलकर बातचीत की है। असल में स्वरा को उनके बेबाकी भरी बातचीत के लिए जाना जाता है। चाहे वो स्त्री अधिकार की बातचीत हो या फिर देश के समसामयिक और राजनैतिक विषय हों, वो हर जगह बड़ी साफगोई से अपना मतव्य व्यक्त करती हैं। लेकिन एक ऐसा मामला था जिस पर वो आकर अटक गई थीं। बीते करीब एक साल से स्वरा भास्कर ने अपने और हिमांशू शर्मा के ब्रेकअप पर कुछ नहीं कहा था।

हाल ही में उन्होंने बॉलीवुड जगत की अंदर की खबरें रखने वाले वेबपोर्टल पिकविला से बातचीत के दौरान इस रहस्य से पर्दा उठाया। स्वरा भास्कर ने कहा कि अब हिमांशू और उनकी राहें अलग हैं। असल में यही प्रमुख कारण भी था दोनों के अलग होने का। क्योंकि दोनों दो अलग दिशाओं में जाना चाहते थे। स्वरा कहती हैं कि कई मर्तबा जीवन में ऐसे मोड़ आते हैं जब पार्टनर किसी और तरफ जाना चाहता है और आप किसी और तरफ। ऐसे में कोई एक समझौता करके अपना रास्ता छोड़ दे तो रिश्ते टिक जाते हैं। लेकिन जब दोनों

ही अपने रास्ते ना हिलने की सोच रहे हो तो रिश्ते नहीं बच पाते। स्वरा के अनुसार उनके और हिमांशू के रिश्ते में किसी ने किसी को धोखा नहीं दिया।

बल्कि दोनों के ब्रेकअप की असल वजह यही थी कि दोनों का सफर यहीं तक था। अब दोनों ही अपने-अपने रास्ते आगे बढ़ रहे हैं। हालांकि स्वरा ने स्वीकारा कि किसी रिश्ते से बाहर आना इतना आसान नहीं होता।

हालांकि जब वो इस दौर से गुजर रही थीं तो उनके आसपास के सभी लोगों ने उनको पूरा सहयोग किया। उल्लेखनीय है कि इन दिनों स्वरा पूरी तरह से राजनैतिक गतिविधियों में वृद्ध गई हैं। बीते लोकसभा चुनाव में उन्होंने बेगूसराय लोकसभा सीट पर जमकर कन्हैया वुमार का प्रचार किया। इसके बाद सीएए-एनआरसी, जेएनयू विवाद आदि में भी उन्होंने खुलकर हिस्सा लिया। इस चक्र में उनकी बॉलीवुड जना थोड़ी प्रभावित भी हो रही है। स्वरा की इस साल 'शीर कोरमा' रिलीज हो सकती है।

स्वास्थ्य

कलौंजी का तेल

कु शोभा



कलौंजी का तेल है अमृत के समान-कलौंजी का तेल हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, डाइबिटीज, अस्थमा, खांसी, नजला, जोड़ों के दर्द, बदन दर्द, कैंसर, किडनी, गुर्दे की पत्थरी, मूत्राशय के रोग, मर्दाना कमजोरी, बालों के रोगों, मोटापे, याद दाश्त बढ़ाने, मुंहासे, सुंदर चेहरा, अजीर्ण, उल्टी, तेज़ाब, बवासीर, लयुकोरिया आदि गंभीर बीमारियों से एक साथ निजात दिलाने में सक्षम है। ऐसी दवा जो एड्स, कैंसर डाइबिटीज, किडनी की समस्याएं और कई गंभीर बीमारियों से एक साथ निजात दिलाने में सहायक है यह अनमोल चमत्कारिक दवा है, ब्लैक सीड ऑइल, जिसे कलौंजी का तेल कहा जाता है। कलौंजी तेल में मौजूद दो बेहद प्रभावकारी तत्व थाइमोक्विनोन और थाइमोहाइड्रोक्विनोन इसके विशेष Healing प्रभाव के लिए जिम्मेदार हैं। ये दोनों तत्व मिलकर इन सभी बीमारियों से लड़ने और

शरीर को हील करने में मदद करते हैं। हजारों मरीजों ने कलौंजी का तेल को अनेक बीमारियों में सेवन किया जैसे हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, डाइबिटीज, अस्थमा, खांसी, नजला, जोड़ों के दर्द, बदन दर्द, कैंसर, किडनी, गुर्दे की पत्थरी, मूत्राशय के रोग, मर्दाना कमजोरी, बालों के रोगों, मोटापे, याद दाश्त बढ़ाने, मुंहासे, सुंदर चेहरा, अजीर्ण, उल्टी, तेज़ाब, बवासीर, लयुकोरिया आदि रोगों में बहुत शीघ्र लाभ हुआ। अब बात करते हैं कलौंजी तेल के उपयोग के बारे में किन-किन बीमारियों में कैसे सेवन कर सकते हैं

टाइप 2 डाइबिटीज-

प्रतिदिन 2 ग्राम कलौंजी के सेवन के परिणामस्वरूप तेज़ हो रहा ग्लूकोज कम

होता है। इंसुलिन रैजिस्ट्रेंस घटती है, बीटा सैल की कार्यप्रणाली में वृद्धि होती है तथा ग्लाइकोसिलेटिड हीमोग्लोबिन में कमी आती है।

उच्च रक्तचाप-

100 या 200 मिलीग्राम कलौंजी के सत्व के दिन में दो बार सेवन से हाइपरटेंशन के मरीजों में ब्लड प्रेशर कम होता है। रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) में एक कप गर्म पानी में आधा चम्मच कलौंजी का तेल मिलाकर दिन में 2 बार पीने से रक्तचाप सामान्य बना रहता है। तथा 28 मिलीलीटर जैतून का तेल और एक चम्मच कलौंजी का तेल मिलाकर पूरे शरीर पर मालिश आधे घंटे तक धूप में रहने से रक्तचाप में लाभ मिलता है। यह क्रिया हर तीसरे दिन एक महीने तक करना चाहिए।

दुःख क्यों होता है ?



दुःख पैदा होता है क्योंकि हम बदलाव को होने नहीं देते। हम पकड़ते हैं, हम चाहते हैं कि चीजें स्थिर हों। यदि तुम किसी स्त्री को प्रेम करते हो तो तुम उसे आने वाले कल भी चाहते हो, वैसी ही जैसी कि वह तुम्हारे लिए आज है। इस तरह से दुख पैदा होता है। कोई भी आने वाले क्षण के लिए सुनिश्चित नहीं हो सकता--आने वाले कल कि तो बात ही क्या करें ?

होश से भरा व्यक्ति जानता है कि जीवन सतत बदल रहा है। जीवन बदलाहट है। यहां एक ही चीज स्थायी है, और वह है बदलाव। बदलाव के अलावा हर चीज बदलती है। जीवन की इस प्रकृति को स्वीकारना, इस बदलते अस्तित्व को उसके सभी मौसम और मूड के साथ स्वीकारना, यह सतत प्रवाह जो एक क्षण के लिए भी नहीं रुकता, आनंदपूर्ण है। तब कोई भी तुम्हारे आनंद को विचलित नहीं कर सकता। स्थाई हो जाने की तुम्हारी चाह तुम्हारे लिए तकलीफ पैदा करती है। यदि तुम ऐसा जीवन जीना चाहते हो जिसमें कोई बदलाव न हो-तुम असंभव बात करना चाहते हो। होश से भरा व्यक्ति इतना साहसी होता है कि इस बदलती घटना को स्वीकार लेता है। उस स्वीकार में आनंद है। तब सब कुछ शुभ है। तब तुम कभी भी विषाद से नहीं भरते।

कैंसर बीमारी में -

एक गिलास अंगूर के रस में आधा चम्मच कलौंजी का तेल मिलाकर दिन में 3 बार पीने से कैंसर का रोग में लाभ होता है। इससे आंतों का कैंसर, ब्लड कैंसर व गले का कैंसर आदि में भी लाभ मिलता है। इस रोग में रोगी को औषधि देने के साथ ही एक किलो जौ के आटे में 2 किलो गेहूं का आटा मिलाकर इसकी रोटी, दलिया बनाकर रोगी को देना चाहिए। इस रोग में आलू, अरबी और बेंगन का सेवन नहीं करना चाहिए। कैंसर के रोगी को कलौंजी डालकर हलवा बनाकर खाना चाहिए।

त्वचा विकार-

कलौंजी के चूर्ण को नारियल के तेल में मिलाकर त्वचा पर मालिश करने से त्वचा के विकार नष्ट होते हैं। सिरके में कलौंजी को पीसकर रात को सोते समय पूरे चेहरे पर लगाएं और सुबह पानी से चेहरे को साफ करने से मुंहासे कुछ दिनों में ही ठीक हो जाते हैं। 50 ग्राम कलौंजी के बीजों को पीस लें और इसमें 10 ग्राम बिल्व के पत्तों का रस व 10 ग्राम हल्दी मिलाकर लेप बना लें। यह लेप खाज-खुजली में प्रतिदिन लगाने से रोग ठीक होता है।

सर्दी-जुकाम ,खांसी में -

कलौंजी के बीजों को सेंककर और कपड़े में लपेटकर सूंघने से और कलौंजी का तेल और जैतून का तेल बराबर की मात्रा में नाक में टपकाने से सर्दी-जुकाम समाप्त होता है। आधा कप पानी में आधा चम्मच कलौंजी का तेल व चौथाई चम्मच जैतून का तेल मिलाकर इतना उबालें कि पानी खत्म हो जाएं और केवल तेल ही रह जाए। इसके बाद इसे छानकर 2 बूंद नाक में डालें। इससे सर्दी-जुकाम ठीक होता है। यह पुराने जुकाम भी लाभकारी होता है। 20 ग्राम कलौंजी को अच्छी तरह से पकाकर किसी कपड़े में बांधकर नाक से सूंघने से बंद नाक खुल जाती है और जुकाम ठीक होता है। जैतून के तेल में कलौंजी का बारीक चूर्ण मिलाकर कपड़े में छानकर बूंद-बूंद करके नाक में डालने से बार-बार जुकाम में छींक आनी बंद हो जाती है और जुकाम ठीक होता है। कलौंजी को सूंघने से जुकाम में आराम मिलता है। यदि बार-बार छींक आती हो तो कलौंजी के बीजों को पीसकर सूंघें।

कलौंजी का उपयोग दर्द के लिए-

कलौंजी को रीठा के पत्तों के साथ काढ़ा बनाकर पीने से गठिया रोग समाप्त होता है। एक चम्मच सिरका, आधा चम्मच कलौंजी का तेल और दो चम्मच शहद मिलाकर सुबह खाली पेट और रात को सोते समय पीने से जोड़ों का दर्द ठीक होता है।

दमा -

कलौंजी को पानी में उबालकर इसका सत्व पीने से अस्थमा में काफी अच्छा प्रभाव पड़ता है। एक चुटकी नमक, आधा चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच घी मिलाकर छाती और गले पर मालिश करें और साथ ही आधा चम्मच कलौंजी का तेल 2 चम्मच शहद के साथ मिलाकर सेवन करें। इससे दमा रोग में आराम मिलता है।

स्त्री रोगों में-

कलौंजी आधा से एक ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम सेवन करने से मासिकधर्म शुरू होता है। इससे गर्भपात होने की संभावना नहीं रहती है। जिन माताओं बहनों को मासिकधर्म कष्ट से आता है उनके लिए कलौंजी आधा से एक ग्राम की मात्रा में सेवन करने से मासिकस्राव का कष्ट दूर होता है और बंद मासिकस्राव शुरू हो जाता है। कलौंजी का चूर्ण 3 ग्राम की मात्रा में शहद मिलाकर चाटने से ऋतुस्राव की पीड़ा नष्ट होती है। मासिकधर्म की अनियमितता में लगभग आधा से डेढ़ ग्राम की मात्रा में कलौंजी के चूर्ण का सेवन करने से मासिकधर्म नियमित समय पर आने लगता है। यदि मासिकस्राव बंद हो गया हो और पेट में दर्द रहता हो तो एक कप गर्म पानी में आधा चम्मच कलौंजी का तेल और दो चम्मच शहद मिलाकर सुबह-शाम पीना चाहिए। इससे बंद मासिकस्राव शुरू हो जाता है।

इम्युनिटी-

रात में सोने से पहले आधा चम्मच कलौंजी का तेल और एक चम्मच शहद मिलाकर पीने से नींद अच्छी आती है। दही में कलौंजी को पीसकर बने लेप को पीड़ित अंग पर लगाने से स्नायु की पीड़ा समाप्त होती है। लगभग 2 ग्राम की मात्रा में कलौंजी को पीसकर 2 ग्राम शहद में मिलाकर सुबह-शाम खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। एक कप गर्म पानी में आधा चम्मच कलौंजी का तेल डालकर रात को सोते समय पीने से स्नायुविक व मानसिक तनाव दूर होता है। कलौंजी को पीसकर लेप करने से नाड़ी की जलन व सूजन दूर होती है।

मरकज मामले की जांच से पहले किसी नतीजे पर पहुंचना सही नहीं-मुस्लिम संगठन

लखनऊ-देश के प्रमुख मुस्लिम संगठनों ने बड़ी तादाद में कोविड-19 संक्रमण के लिये दिल्ली के हजरत निजामुद्दीन मरकज पर दोषारोपण किये जाने पर कहा है कि मामले की जांच के बाद ही किसी नतीजे पर पहुंचा जाना चाहिये। देश में मुसलमानों के सबसे बड़े संगठन आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के महासचिव मौलाना वली रहमानी ने मंगलवार को इस मुद्दे पर बातचीत में कहा, “ मरकज जैसे धार्मिक केन्द्रों में लोगों का आना-जाना लगा रहता है। अब यह जांच का विषय है कि गलती किसकी है मगर उससे पहले ही मरकज को कुसूरवार ठहराना सही नहीं होगा।”

उन्होंने कहा, “ ऐसा कहा जा रहा है कि मरकज कोरोना का केन्द्र है। अगर निजामुद्दीन मरकज से ही कोरोना फैला है तो हिन्दुस्तान में अब तक जो 34 लोग इस संक्रमण से मरे हैं...क्या वे मरकज में रहकर आये थे?” उन्होंने कहा, “ जब निजामुद्दीन मरकज ने प्रशासन को स्थिति के बारे में बता दिया था और बार-बार उसे याद भी दिलाया तो उसके मोहतामि

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के महासचिव मौलाना वली रहमानी ने मंगलवार को इस मुद्दे पर बातचीत में कहा, “ मरकज जैसे धार्मिक केन्द्रों में लोगों का आना-जाना लगा रहता है। अब यह जांच का विषय है कि गलती किसकी है मगर उससे पहले ही मरकज को कुसूरवार ठहराना सही नहीं होगा।”



पर मुकदमा चलाने की बात कहाँ तक दुरुस्त है?” इस बीच, देश में शिया मुसलमानों के प्रमुख संगठन आल इण्डिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड

का भी कहना है कि बिना जांच किये किसी को भी कुसूरवार ठहराना सही नहीं है। बोर्ड के प्रवक्ता मौलाना यासूब अब्बास ने कहा, “ मरकज

का प्रबन्धन लॉकडाउन के बाद वहाँ पैदा हुई सूरतेहाल के बारे में प्रशासन को जानकारी देने की बात कह रहा है।

वहीं, प्रशासन इससे इनकार कर रहा है। यह जांच का विषय है। बिना जांच किये किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिये।” हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि मरकज को यह मामला इतने हल्के में नहीं लेना चाहिये था।

अगर उन्होंने प्रशासन को इस बारे में बताया था तो उसे इसका सबूत भी दिखाना चाहिये। गौरतलब है कि इंडोनेशिया और मलेशिया समेत अनेक देशों के 2000 से अधिक प्रतिनिधियों ने एक से 15 मार्च तक हजरत निजामुद्दीन में तबलीगी जमात में भाग लिया था। कार्यक्रम में शामिल हुए करीब 30 लोगों के कोरोना वायरस से संक्रमित होने की पुष्टि हुई है और पिछले कुछ दिनों में तीन की मौत भी हुई। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने जमात की अगुवाई करने वाले मौलाना के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया था।

मजदूरों को रसायन से नहलाने का अमानवीय काम नहीं करे उप सरकार-प्रियंका



नई दिल्ली- कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा ने उत्तर प्रदेश के बरेली में मजदूरों को कथित तौर पर सैनेटाइजर से नहलाने की घटना को अमानवीय करार देते हुए कहा कि राज्य की भाजपा सरकार को पहले से ही दुख-तकलीफों का सामना कर रहे कामगारों को रसायन से नहीं नहलाना चाहिए। उन्होंने इससे जुड़ा एक वीडियो शेयर करते हुए ट्वीट किया, उप सरकार से गुजारिश है कि हम सब मिलकर इस आपदा के खिलाफ लड़ रहे हैं लेकिन कृपा करके ऐसे अमानवीय काम मत करो। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रियंका ने कहा, मजदूरों ने पहले से ही बहुत दुख बर्दाश्त किए हैं। उनको रसायन डाल कर इस तरह नहलाइए मत। इससे उनका बचाव नहीं होगा बल्कि उनकी सेहत के लिए और खतरे पैदा हो जाएंगे।

उन्होंने राजस्थान की कांग्रेस सरकार द्वारा उठाए गए कुछ कदमों का हवाला देते यह भी कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार को भी ऐसा करना चाहिए। प्रियंका के मुताबिक असाधारण समय में अभूतपूर्व फैसले भी लेने पड़ते हैं। राजस्थान सरकार 5 चीनी मिलों व 5 निजी डिस्टिलरी से हर दिन पांच लाख सैनेटाइजर की आपूर्ति करवा रही है। इससे जमाखोरी भी नहीं होगी। दाम कम रहेंगे और हमारे स्वास्थ्य योद्धाओं की सुरक्षा बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि ये कार्य उत्तर प्रदेश सरकार भी कर सकती है।



नई दिल्ली- आम आदमी पार्टी (आप) की विधायक आतिशी ने तीन दिन का इज्तिमा (मजहबी मकसद से एक खास जगह जमा होना) आयोजित करने के लिए निजामुद्दीन मरकज के अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। साथ ही उन्होंने सरकार की ओर से इस तरह से लोगों के जुटने पर रोक लगाए जाने के बावजूद दिल्ली पुलिस

आप विधायक अतिशी ने निजामुद्दीन मरकज के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की

द्वारा अपेक्षित कदम नहीं उठाने पर भी सवाल किया। दिल्ली का निजामुद्दीन इलाका भारत में कोविड-19 के एक केंद्र के तौर पर सामना आ रहा है क्योंकि पिछले कुछ दिनों में यहां कई लोगों के संक्रमित होने की पुष्टि हुई है। इंडोनेशिया और मलेशिया समेत विभिन्न देशों के दो हजार से ज्यादा लोगों ने 13 से 15 मार्च के बीच निजामुद्दीन (पश्चिम) इलाके में तबलीगी जमात के इज्तिमे में हिस्सा लिया था। तबलीगी जमात के मुख्यालय (मरकज) जाने वाले कम से कम 24 लोगों के कोविड-19 से संक्रमित होने की पुष्टि हुई है। इसके बाद प्रशासन हरकत में आया और उसने इलाके की घेराबंदी की तथा लोगों की जांच

करना शुरू की। 200 से ज्यादा लोगों के जमा होने पर रोक लगाने के दिल्ली सरकार के आदेश का हवाला देते हुए आतिशी ने निजामुद्दीन मरकज (केंद्र) के प्रशासकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। कालकाजी की विधायक ने ट्वीट किया, “तीन दिन की धार्मिक सभा आयोजित करने वाले निजामुद्दीन मरकज के प्रशासकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए जिसमें 13-15 मार्च के बीच 1000 से ज्यादा लोग शामिल हुए थे। दिल्ली सरकार के आदेशों ने 13 मार्च को ही स्पष्ट रूप से सभाओं या 200 से अधिक व्यक्तियों के जमा होने पर रोक लगा दी थी।”

उन्होंने कहा, “12 मार्च के दिल्ली सरकार की अधिसूचना में कहा गया था कि जो भी कोविड-19 से प्रभावित देशों की यात्रा से हाल में लौटा हों, वे खुद को पृथक कर ले। तो फिर मरकज के प्रशासकों ने उन देशों से आने वाले लोगों को अलग थलग करना क्यों सुनिश्चित नहीं किया?” आतिशी ने दिल्ली पुलिस को भी निशाने पर लिया और सवाल किया कि उसने कार्रवाई क्यों नहीं की। उन्होंने कहा की दिल्ली पुलिस ने 13-15 मार्च तक निजामुद्दीन मरकज में बड़े धार्मिक आयोजन के खिलाफ क्या कार्रवाई की, जब दिल्ली सरकार के आदेश थे कि 200 से ज्यादा लोगों को जमा होने से रोका जाए? केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा संबंधित पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई किए जाने की जरूरत है। “एक अन्य ट्वीट में आतिशी ने निजामुद्दीन थाने और निजामुद्दीन मरकज के बीच की दूरी को दिखाने के लिए एक स्क्रीनशॉट टैग किया। आप नेता ने कहा हजरत निजामुद्दीन थाना, निजामुद्दीन मरकज से एक दम बराबर में है जो गूगल मैप से देखा जा सकता है।

प्रिंस चार्ल्स कोविड-19 से हुए स्वस्थ, एकांतवास से आए बाहर

लंदन-कोरोना वायरस सांमण की पुष्टि होने के सात दिन बाद ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स सोमवार को स्वयं के एकांतवास से बाहर आ गये। राजपरिवार के एक प्रवक्ता ने यह जानकारी दी। ब्रिटिश राजगद्दी के उत्तराधिकारी (71) पिछले सप्ताह राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा (एनएचएस) में कोरोना वायरस परीक्षण कराने के बाद स्कॉटलैंड में शाही बालमोरल संपदा में पृथक रूप से रहने लगे थे। उनके प्रवक्ता ने कहा, क्लीयरेंस हाउस (राजपरिवार निवास) ने आज (सोमवार को) पुष्टि की कि डॉक्टरों के परामर्श के बाद प्रिंस ऑफ वेल्स अब स्वयं के एकांतवास से बाहर आ गये हैं। प्रिंस चार्ल्स की पत्नी कैमिला (72) उसी समय जांच में कोरोना वायरस से सांमित नहीं पायी गयी थीं लेकिन तब से वह भी बालमोरल में अलग रह रही थीं। इस शाही दंपति ने पिछले कुछ समय पूर्व मेडिकल जांच करायी थी।

स्वास्थ्य मंत्रालय ने ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं से वेंटिलेटर बनाने के निर्देश दिये

नई दिल्ली- केंद्र सरकार ने कोरोना वायरस के बढ़ते मामलों को देखते हुए ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं से अपनी फैक्टरियों में वेंटिलेटर का उत्पादन करने के लिए कहा है। सरकार ने कहा कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) अगले हफ्ते से प्रति दिन 20,000 एन- 95 मास्क बनाना शुरू कर देगा।

स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, देश के विभिन्न अस्पतालों में कोविड-19 के रोगियों के लिए 14,000 से अधिक मौजूदा वेंटिलेटर अलग रखे गए हैं, जबकि भंडार में 11.5 लाख एन-95 मास्क हैं। मंत्रालय ने कहा कि पिछले दो दिनों के दौरान पांच लाख मास्क वितरित किए गए और आगामी दिन में 1.40 लाख मास्क बांटे जाएंगे। मंत्रालय ने बताया कि 3.34 लाख निजी सुरक्षा उपकरण (पीपीई) वाले रक्षात्मक सूट देश के अस्पतालों में उपलब्ध हैं और चार अप्रैल तक दान में मिले तीन लाख ऐसे रक्षात्मक सूट विदेश से आ

जाएंगे। स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक ट्वीट में कहा, ऑटोमोबाइल विनिर्माताओं से वेंटिलेटर बनाने को कहा गया और वे इस दिशा में काम कर रहे हैं। इसी के साथ मंत्रालय ने रक्षा मंत्रालय के तहत आने वाली सरकारी कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (बीईएल) को स्थानीय विनिर्माताओं के साथ मिलकर अगले दो महीने में 30,000 वेंटिलेटर बनाने के लिए कहा है। मंत्रालय ने एक अन्य ट्वीट में बताया कि मंत्रालय ने नोएडा की निजी क्षेत्र की अगवा हेल्थकेयर को एक महीने के अंदर 10,000 वेंटिलेटर बनाने का ऑर्डर दिया है। उनकी आपूर्ति अप्रैल के दूसरे हफ्ते से शुरू होने की उम्मीद है। इसने कहा कि दो घरेलू निर्माता प्रतिदिन 50,000 एन-95 मास्क का उत्पादन कर रहे हैं। इनके अगले सप्ताह के भीतर यह उत्पादन एक लाख प्रति दिन तक जाने की उम्मीद है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि पीपीई रक्षात्मक सूट के 11 घरेलू उत्पादक अब तक मापदंडों पर

खरे उतरे हैं और उन्हें 21 लाख ऐसे सूट बनाने के लिए ऑर्डर दिए गए हैं। वे प्रति दिन 6-7 हजार सूट की आपूर्ति (सप्लाय) दे रहे हैं और उम्मीद है कि अप्रैल मध्य तक यह 15,000 सूट प्रतिदिन पहुंच जाएगा। इसने आगे कहा कि रेड क्रॉस ने 10,000 पीपीई रक्षात्मक सूट दान दिए हैं। ये प्राप्त हो गए हैं तथा वे वितरित किए जाएंगे। मंत्रालय ने ट्विटर पर बताय कि विदेश मंत्रालय के जरिए 10 लाख पीपीई किट का ऑर्डर सिंगापुर की एक कंपनी को दिया गया है और उनकी आपूर्ति जल्द होने की उम्मीद है। इसने यह भी बताया कि एक और घरेलू निर्माता सोमवार को मापदंडों पर खरा उतरा है और उसे पांच लाख पीपीई रक्षात्मक सूट का ऑर्डर दिया जा रहा है। .डीआरडीओ अगले हफ्ते से प्रतिदिन 20000 एन-95 मास्क बनाना शुरू कर देगा। बीईएल को भी अगले दो महीने में 30 हजार वेंटिलेटर बनाने के निर्देश दिये गये हैं।

सीबीआई ने हिमाचल प्रदेश में छात्रवृत्ति घोटाले में 12 लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया

नई दिल्ली-केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने हिमाचल प्रदेश में 220 करोड़ रुपये के छात्रवृत्ति घोटाले में 12 लोगों के खिलाफ आरोपपत्र दायर किया।

अधिकारियों ने बताया कि एजेंसी ने अनुसूचित जाति, जनजाति और अल्पसंख्यकों के लिए मैट्रिक पूर्व और मैट्रिक बाद की छात्रवृत्ति के वितरण में अनियमितता के मामले में केसी ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशंस के तत्कालीन पांच अधिकारियों को नामजद किया है।

उन्होंने बताया कि उच्च शिक्षा निदेशालय के तत्कालीन अधिकारियों-अरविन्द राज्जा, माला मेहता, श्रीराम शर्मा, सुरिंदर मोहन कंवर,

अशोक कुमार, वीरेंद्र कुमार का नाम भी आरोपपत्र में आरोपी के रूप में शामिल किया गया है। केसी ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशंस के जिन तत्कालीन अधिकारियों को आरोपी बनाया गया है, उनमें सरोज शर्मा, बीएस संधु, हितेश गांधी, प्रेमपाल गांधी और किरण चौधरी शामिल हैं।

इनके अलावा सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया की पंजाब के नवांशहर स्थित शाखा के हेड कैशियर रहे सुरेंद्रपाल सिंह को भी आरोपी बनाया गया है। एजेंसी के प्रवक्ता आर के गौड़ ने बताया कि सीबीआई ने गत मई में हिमाचल प्रदेश सरकार के आग्रह पर मामला दर्ज किया था।